रामानुजगंज

एक आवाज

श्रद्धेय बजरंग मुनि

लेखक
नरेन्द्र रघुनाथ सिंह

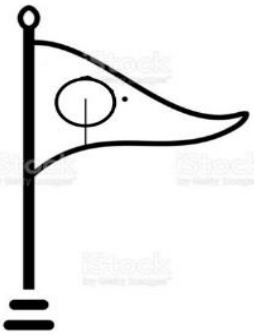

ज्ञानयज्ञ प्रार्थना

हे प्रभु, आप मुझे शक्ति दो कि
मै दूसरों को अपनी इच्छानुसार
संचालित करने की इच्छा
अथवा दूसरों की इच्छानुसार
संचालित होने की
मजबूरी से दूर रह सकूँ।
यदि ऐसा न हो तो सबको सहमत कर
सकूँ और फिर भी ऐसा न हो तो
ऐसी इच्छाओं का
अहिंसक प्रतिरोध करूँ।

ज्ञानयज्ञ परिवार

'रामानुजगंज'

(एक आवाज)

दृश्य–1

नेपथ्य से सूत्रधार–

दूर नक्श है बदलाव का मंजर,
मुझे धुंधला सा नजर तो आता है,
कि रास्ते नहीं हैं तामीर फिर भी,
उस जानिब कूच को मेरा जमीर कहता है....।

यूँ तो कुदरत ने हर बशर को एक आवाज बख्शी है लेकिन कायनात में आदमी की आवाज का मुकाम बेहद आला है। दुनिया में राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, गांधी जैसे अनेक महापुरुषों ने अपने–अपने में दौर में जमाने के उत्थान को आवाज दी है। इन्होंने समाज की बिगड़ी हुई परिस्थितियों के उत्थान हेतु लोगों का आहवान किया, दृष्टांत दिए और जरूरत के अनुसार मुश्किल भरे आचरण किए! वस्तुतः जो आदमी समाज के उत्थान के लिए अपना वजूद दांव पर लगा देता है, जिसकी चेतना लोक जीवन को सन्तुलित बनाने के प्रति उत्तरदायी सिद्ध होती है, उसका चरित्र ही समाज की आवाज बन जाता है। लेकिन प्रश्न यह खड़ा होता है कि समाज को अनेक इतने उच्च आदर्श स्थापित करने वाले लोगों का मार्गदर्शन प्राप्त होने के बाद भी अनेक बार यह अपने रास्ते से क्यों भटक जाता है। वस्तुतः समीक्षा के दृष्टिकोण से देखें तो ऐसा होने के अनेक लोग अनेक कारण सिद्ध करते हैं। मै भी ऐसा होने का एक कारण मानता हूँ और यह सर्वमान्य तथ्य है कि प्रकृति का जीवन चक्र परिवर्तनशील है, इसी आधार पर कालान्तर में जीवन की दशाएं तथा समाज का आकार–प्रकार बदल जाता है तब इस दशा में स्थापित व्यवस्थाएं समाज के विस्तारित स्वरूप का समुचित प्रबन्ध नही कर पाती हैं क्योंकि तब स्थापित व्यवस्थाएं काल–बाह्य सिद्ध हो जाती हैं। इसलिए समाज का परिप्रेक्ष्य व्यवस्थित करने के लिए व्यवस्था का आधुनिकीकरण या यथार्थ के अनुसार पुनःनिर्माण आवश्यक हो जाता है। मूलतः व्यवस्था का यह आधुनिकीकरण ही व्यवस्था परिवर्तन कहलाता है। यहाँ पर यह बात स्पष्ट कर दी जानी भी आवश्यक है कि स्थापित व्यवस्था में समुचित बदलाव का यह प्रयास अपने मार्गदर्शकों का कतई भी अपमान करने का या उन्हें कमतर आंकने का प्रयास नही होता है। इतिहास इस विषय में हमसे यह स्पष्ट करता है कि इतिहास के नायकों ने अपने दौर में वैसा ही किया था जैसा कि वर्तमान पीढ़ी अपने यथार्थ में करना चाहती है। यह आधुनिक युग जो बीत रहा है इसमें समाज असमंजस में है तथा चारो और क्रोध, स्वार्थ, मौकापरस्ती का माहौल कायम है। जिधर देखो उधर आदमी उत्तरदायित्वों से विमुख है और समाज द्वारा निर्मित धर्म, राज्य, न्यायाधिकरण, अर्थ जैसी सभी संस्थाएं तथा संगठन समाज पर अपना वर्चस्व थोपना तो चाहती हैं लेकिन कोई अपना सामाजीकरण करना ही नहीं चाहता! जब हम दूसरे विश्व युद्ध के बाद के विश्व के इतिहास का अवलोकन करते हैं तो एकबारगी लगता है कि अब मानव सभ्यता विभिन्न देशों या राज्यों के बीच होने वाले सैन्य संघर्षो से मुक्ति पा जाएगी! लेकिन ऐसा कुछ नही हुआ और दुनिया में हुए सामरिक शक्ति के विकास ने अनेक देशों के बीच हो सकने वाले खतरनाक प्रतिद्वन्दिता के अवसर विकसित कर दिये हैं। इस किंकर्तव्यविमुढ़ता की स्थिति में समाज अपने आप से यह प्रश्न करता हुआ प्रतीत होता है कि मेरा अस्तित्व और मेरी सभ्यता कैसे जीवित रह सकेगी? क्या परमाणु बमों के दम पर हम जीवित रह सकेगें अथवा इसका अन्य कोई दूसरा विकल्प हो सकता है?

मानव सभ्यता के समुचित मार्गदर्शन के लिए, इसके जीवन चक्र को सन्तुलित बनाने के लिए मुझे भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के रामानुजगंज कस्बे के आसपास के जंगलों से एक आवाज बुलन्द होते हुए प्रतीत होती है। मैने जब इस आवाज पर कनखी लगायी तो पता चला कि यहाँ के लोगों का यह प्रयास समाज–विज्ञान के महानतम अनुसंधान का साक्षी है। इस अनुसंधान को, समाज तर्क तथा लोक कला दोनों ही रूप में जानें, इसके लिए मानव सभ्यता के झण्डाबरदारों को इसका अधिकतम प्रयास करना होगा। इस अनुसंधानिक यात्रा की शुरुआत भारत की आजादी के कुछ वर्षों बाद होती है। एक जिज्ञासु बालक अपनी माँ से कहता है–

———————————

दृश्य–2

(दिवस का प्रथम प्रहर– घर का दृश्य (रसोईघर))

पात्र– कबीर, माँ, भवानी, पिता जी

(सुबह की बेला में सूरज का प्रकाश सम्पूर्ण प्रकृति को अपनी आगोश में लेता जा रहा है। कबीर के घर के दालान में भी सूरज की धूप फैल रही है। मानों रसोई घर के छोटे से झरोखे से सूरज झांककर कह रहा है कि माँ भोजन का एक ग्रास मुझे भी दे दो।..... कबीर छाया में बैठा हुआ है।)

कबीर– माँ, आप रोज रोटी बनाने में इतना समय लगाती हैं, क्यों न हम कई दिन की रोटियां एक दिन बनाकर रख लें और बाकी दिन आराम से खाते रहें।

माँ– तेरा सुझाव तो अच्छा है 'कबीर' पर कुदरत ने रोटी को इतनी लम्बी जिन्दगी नहीं दी जो यह कई दिनों तक बनाने वाले के काम आती रहे। ज्यादा दिन तक रखी हुई रोटी और बिना मकसद की जिन्दगी बेरौनक और बेस्वाद हो जाती है।

कबीर– माँ, तो फिर मेरी जिन्दगी का क्या मकसद होना चाहिए, माँ? (जिज्ञासा वश प्रश्न पूछता है।)

माँ– यह तो, आदमी को खुद ही तय करना चाहिए, बेटा।

कबीर– क्या आप मां होकर भी मुझे यह नहीं बता सकती कि मुझे क्या करना चाहिए?

माँ– तु जिज्ञासु बहुत है। जीवन में जिम्मेदार आदमी बनना, जिससे तेरा परिवार भी अच्छा बने और समाज भी अच्छा बने।

कबीर– ये समाज क्या होता है माँ?

माँ– हम, गाँव, देश और दुनिया में जिनके साथ रहते हैं, वह सब समाज ही तो है। हमारे पास और दूर रहने वाले सभी लोग समाज होते हैं।

कबीर– मतलब क्या सभी लोग! अमीर–गरीब, ऊँचा–नीचा, देश–विदेश सभी लोग समाज होते हैं, माँ?

माँ– हाँ! सभी लोग समाज होते हैं और अमीर–गरीब, ऊंच–नीच का भेद तो आदमी ने किया है, विधाता ने ऐसा कुछ भी नहीं बनाया कबीर।

कबीर– बनाया है माँ, मेरा सहपाठी जगत ऐसा कहता है कि हम ऊँची जाति के और गणेश नीची जाति का है। हमें भगवान ने **ऊँची** जाति में जन्म दिया और गणेश को नीची जाति में। जगत हमारे स्कूल का दादा भी है माँ।

माँ– तुझे ये सब बातें याद क्यों रहती है कबीर? कहाँ–कहाँ की बातें याद किए रहता है?

कबीर– क्या ऐसी बातें गलत होती है?

माँ– नहीं! ....इन बातों में वजन बहुत होता है। जिन्दगी इनके नीचे दबकर दम तोड़ देती है मेरे बच्चे, लेकिन तू अभी नहीं समझ पाएगा।

(पिताजी की उंगली थामे भवानी, कबीर का बड़ा भाई रसोई घर में आता है)

पिताजी– लेकिन ये क्या नहीं समझेगा? (इस बार कबीर के पिता उनके बीच अपनी बात कहते हैं।)

माँ– यह कि यह अपनी उम्र से ज्यादा बड़ा होता जा रहा है। अक्सर इसकी बातें मेरी समझ के परे होती हैं।

पिताजी– ईश्वर पर विश्वास करो, वह न्याय ही करेगें। इसके व्यवहार को देखकर मैं भी यही समझ रहा हूँ कि यह बच्चा विलक्षण है पर इसकी दिशा भी ठीक है।

दृश्य 3

पात्र– कबीर, जगत, बृजेश

(कबीर की उम्र (लगभग 15 वर्ष) युवावस्था की ओर बढ़ चलती है। एक दिन गली के नुक्कड़ पर खड़ा जगत कबीर को देखकर वृजेश से कहता है।)

जगत– ऊँचे लोगों को नीचे लोगों के साथ व्यवहार नहीं करना चाहिए, बृजेश! क्या यह अच्छा है कि कबीर भंगी के घर भी खाना खा लेता है?

बृजेश– इसकी यह बात तो ठीक नहीं है।

कबीर– लेकिन प्रश्न तो यह भी होना चाहिए कि इसमें गलत क्या है?

जगत– गलत है, समाज की परम्परा का तोड़ा जाना कबीर!

कबीर– लेकिन परम्पराएं जब समाज के अस्तित्व के लिए खतरा बनने लगे तो उन्हें रूढ़ि कहना ठीक रहता है और रूढ़िवाद सभ्यता के विकास के लिए खतरा होता है।

जगत– तुम हमेशा लोक व्यवहार के विरुद्ध जाने की कोशिश करते हो कबीर और समाज के परिदृश्य को तर्क के आधार पर झूठलाना चाहते हो!

कबीर– तर्क, सत्य और यथार्थ की कसौटी होता है मेरे भाई।

जगत– तो तुम हमारी बात नहीं मानोगे।

कबीर– अगर तुम लोग मुझे यह बात समझा दोगे कि भंगी के घर भोजन करने से समाज टूटता है तो मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा!

जगत– ठीक है, हम तुम्हारी इस गलती की शिकायत तुम्हारे पिता से करेगें।

कबीर– जैसी तुम लोगों की मर्जी।

दृश्य–4

पात्र– (पिताजी, भवानी भैया, ब्राह्मण श्रेष्ठ– राधे (उम्र 70 साल), कबीर व अन्य लोग)

(कबीर कभी गड़ेरिये के यहाँ, कभी भंगी के यहाँ और कभी हरिजन के यहाँ खाता–पीता रहा और इसमें उसे कोई आपत्ति भी नहीं थी, क्योंकि उन सभी का व्यवहार एवं आचरण पवित्र थे। वे मानसिक तौर पर ब्राह्मणत्व से अलग नहीं थे। पर,..... (गम्भीर संगीत ध्वनि).....इन लोगों के साथ रहने में कबीर को कोई आपत्ति नहीं थी, वही दूसरी ओर उसका परिवार तथा कुल के लोग कबीर के प्रति आपत्तियों से भर गए थे। एक बार कबीर को समझाने के लिए परिवार और उसके कुल के लोग बैठते हैं, बीच में कबीर हैरत भाव में खड़ा रहता है। जहां एक ओर रूढ़िवादी आदर्श होता है वहीं दूसरी ओर यथार्थ की कसौटी पर खरा उतरने वाला 'कबीर')

भवानी– क्या तुम्हें पता है, तुम्हारे ऐसा करने से हमारी मर्यादाएं टूट रही हैं..... (हल्के क्रोध से)

कबीर– भैया, मर्यादा, लेकिन कैसे?

भवानी– (क्रोध में) तुम्हारा इन नीच लोगों के साथ रहने से जो सवाल पैदा होते है, पिताजी कैसे उनके जवाब दे पाएगें!

(पिताजी, संकेत में भवानी को चुप होने को कहते हैं)

पिता जी– देखो बेटा, तुम्हारे ऐसा करने से समाज में हमारी क्या इज्जत रह जाएगी? कौन हमें श्रेष्ठ मानकर हमसे यजमानी और शिष्टता का बर्ताव करेगा?..... बताओ!

कबीर– (यथार्थ को समझने वाला कबीर बड़े भैया की रूढिवादी बात का स्पष्टिकरण करते हुए कहता है–) पिताजी, क्या उनके साथ रहने एवं खाने–पीने से हमारी शिष्टता और श्रेष्ठता समाप्त हो जाती है? और हाँ आप लोग जिस ईश्वर की आराधना करते हैं वह भी प्रेम का ही भूखा है। भला ईश्वर का अपमान करने वाली धारणएं क्योंकर हमारे समाज की व्यवस्था का आधार बननी चाहिए.....!

(पिता जी, भवानी भैया, राधे ब्राह्मण कुल के लोग, सबकी भृकुटी कबीर पर तन जाती है)

राधे– कबीर, तो तुम हम सबकी बात नहीं मानोगें। देखो, तुम्हारे कुल का बुजुर्ग होने के नाते मैं यह कह रहा हूँ, जो परम्परा जैसी हैं उसे वैसा ही रहने दो.....! ठीक रहेगा कि तुम उनके साथ रहना छोड़ दो।

कबीर– यह बात ऐसा करने का कोई तार्किक आधार तो नहीं है दादा जी.....!

भवानी– कबीर, तुझे पता है तू क्या कह रहा है?

राधे– तुम क्या चाहते हो कबीर?

कबीर– मैं किसी के साथ भेद–भाव का व्यवहार नहीं कर सकता हूँ दादा जी। मैं नीचा काम करने में शर्म मानता हूँ न कि नीची जाति के लोगों के साथ रहने में।

भवानी– (क्रोध में) यह सब तो तुम्हें छोड़ना ही होगा कबीर!

(पिता जी भवानी को चुप रहने का संकेत करते है)

पिताजी– बेटा, ऐसा करना ठीक नहीं होगा, हमारी आजीविका पर भी प्रश्न पैदा हो जाएगा।

कबीर– (गंभीर स्वर में–) मैं ऐसी धर्म–व्यवस्था के अनुसार जीवन निर्वाह नहीं कर सकता जिसमें आदमी को जन्म के कारण ऊँचा–नीचा माना जाता है कर्म के कारण नहीं! बहतर होगा कि मै यह धर्म–व्यवस्था ही छोड़ दूँ।

भवानी– अच्छा है, तेरी इस नाहक जिद से तो मुक्ति मिलेगी!

(सभी लोग गम्भीर भाव से उठकर वहाँ से चले जाते हैं और कबीर ईसाई धर्म के चर्च में जाना शुरू कर देता है)

———————————

दृश्य–5

पात्र– आर्यसमाजी, ब्राह्मण कुल के लोग, कबीर का पूरा परिवार, वृद्ध और कबीर।

(ऐसा होते–होते महीनों बीत जाते हैं, आखिरकार कुछ आर्यसमाजी तथा समाज के अन्य श्रेष्ठ लोग ब्राह्मणों की एक सभा 'कबीर' के घर इकट्ठी करते हैं, ताकि 'कबीर' को समझा–बुझाकर ब्राह्मणत्व में वापस लाया जा सके। समाज के एक वृद्ध व्यक्ति कहते है–)

वृद्ध– कोई बताए कि इस लड़के की बुद्धि पर यह प्रभाव कहां से आया है कि यह अपनी जाति–धर्म की मर्यादा भूल कर मलेक्ष बना जा रहा है। बचपन में इसके लक्षण देखकर ऐसा लगता था कि यह कुल का नाम रोशन करेगा!

भवानी– क्या बताएं दादा जी मन में बड़ा क्रोध उमड़ता है? (.....इसी बीच कबीर भी बैठक में पहुँच जाता है। राधे कबीर से प्रश्न करते हैं–)

राधे– तुम धर्म का क्या अर्थ मानते हो कबीर?

कबीर– किसी अन्य के हित में निःस्वार्थ भाव से किए गए कार्य को धर्म कहते हैं।

राधे– क्या समाज व्यवस्था के निर्माण में धर्म का स्थान नगण्य होना चाहिए?

कबीर– नहीं, बिल्कुल नहीं, हर व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए।

वृद्ध– और सनातन धर्म के विषय में तुम्हारी क्या राय है?

कबीर– जो सदैव से समाज के अनुकूल है वही सनातन धर्म है। परम्पराओं का वह स्वरूप जिसकी निष्ठा समाज की कसौटी पर खरी उतरे अर्थात जो ईश्वर की सृष्टि में किसी के साथ अन्याय न होने दे, भेद–भाव न होने दे, सनातन धर्म की व्यवस्था लोगों को ऐसी राह दिखाती है।

राधे– (इस बार कहते हैं–) और जो तुम अभी कर रहे हो क्या वह सनातन धर्म के अनुसार है? क्या तुम सनातन धर्म के अस्तित्व पर प्रश्न नहीं खड़ा कर रहे हो? क्योंकि जाति व्यवस्था सनातन धर्म की खूबसूरती है इसका अवगुण नहीं!

कबीर– क्या सनातन धर्म छुआछूत या वर्ग (सम्प्रदाय) को बढ़ावा देता है, संघर्ष पैदा करता है आदरणीय? कृपया इसे इस तरह बदनाम न करें। यह बात बेहद गलत है। क्योंकि धर्म वर्ग–सघर्ष का कारण नहीं होता है और भारत में धर्म के दर्शन का विकास गुणात्मक हुआ है न कि इसे हर आदमी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए स्वीकार कर सकता है

(यह चर्चा गम्भीर तर्क–वितर्क में बदलने लगती है। विषय की गम्भीरता को समझते हुए आर्यसमाजी महोदय कहते है–)

आर्यसमाजी– देखिए, सामाजिक दृष्टिकोण से कबीर का पक्ष बिल्कुल सही है और आप लोगों के लिए भी समाज के इस ताने–बाने से बाहर आना इतना सरल नहीं है। इस मुद्दे के निवारण के लिए मैं आप लोगों से यह कहना चाहूँगा कि आप इस मुद्दे को तूल देने के बजाय कबीर को समाज तथा परिवार के बीच समन्वय बनाने में सहयोग करना चाहिए।

(कुछ क्षण रुकने के उपरांत आर्यसमाजी, कबीर से आगे कहते हैं–) कबीर, धर्म–परिवर्तन समाज की समस्याओं का हल नहीं है, पर हाँ विचार मंथन से इस समस्या का हल जरूर निकल सकता है, जो भारत की प्राचीन परंपरा रही है। कबीर! तुम तर्क को महत्वपूर्ण मानते हो, लेकिन याद रहे कि तर्क करो पर वह समाज का मार्गदर्शन करे कटाक्ष नहीं!

कबीर– जी.....। मैं ऐसा प्रयास करूँगा।

(आर्य समाजी, ब्राह्मण कुल के व परिवार के लोगों को संबोधित करते हुए कहते हैं)

आर्यसमाजी– आप सभी लोग कबीर को लेकर ज्यादा चिंता न करें। यह प्राकृतिक रूप से ब्राह्मण प्रवृति का व्यक्ति है हमें इसका रास्ता नहीं रोकना चाहिए।

———————————

दृश्य–6

पात्र– परम्परागत ब्राह्मण, गोकुल, कबीर

(देश आजाद हुए करीब दस वर्ष बीत चुके हैं। रामानुजगंज की गलियों में एक विषय पर सुगबुगाहट हो रही होती है–)

परम्परागत ब्राह्मण – नया जमाना आ रहा है भैया। रामानुजगंज में एक ऐसा लड़का समाज का ब्राह्मण तय हुआ है जो न तो परम्पराओं को मानता है और न समाज के ढ़ाँचे को महत्व देता है। इसके ब्राह्मण कर्म में न प्रथाओं का स्थान है और न छोटे–बड़े का महत्व! कहता है कि उसे तो आर्य समाज ने ऐसा बनने की दीक्षा दी है। यदि ऐसा हुआ तो समाज में ब्राह्मण कर्म करके जीविका चलाने वाले लोग अपना गुजारा कैसे करेगें और कौन हम पर यकीन करेगा?

गोकुल– लेकिन उसकी समझ, उसकी उम्र से बहुत बड़ी है। वह ब्राह्मण कर्म करना चाहता है कि नही मै इसे बहुत महत्वपूर्ण नहीं मानता हूँ लेकिन वह इतनी कम उम्र में समाज को बहुत अच्छा बनाने की बात सोचता है, यह बहुत अच्छा है।

परम्परागत ब्राह्मण – अरे वह नेता बनने की इच्छा रखता है। करीब बीस वर्ष का हो चुका है। देख लेना जल्दी ही कोई न कोई चुनाव लड़ने की कोशिश करेगा।

गोकुल– यह आक्षेप तो आपके ऊपर भी लगाया जा सकता है क्याकि आप उसकी गम्भीर समझ का विरोध करने को ही अपनी जिम्मेदारी मानते हैं लेकिन मेरी समझ में यह ठीक नही है।(....सामने देखते हुए–) लो देखो वह आ गया है। अपनी आपत्तियों को उसी से समझो!

(कबीर, गोकुल से पूरी घटना समझकर शायराना अंदाज में कहता है–)

कबीर– बदलाव जरूरी है क्योंकि सच्चाई पर खाक जमी है,
हालात इतने बदत्तर हैं कि जनता आडम्बर को पूजा कहती है,
आज दुविधा में हर मन है, न सम्बल है कहीं और न यकीं है,
विधाता सोचता होगा यह लाजमी दुनिया किसके बूते बची है.....।

गोकुल– कुछ और भी जानना चाहते हैं महोदय.....!

परम्परागत ब्राह्मण – नहीं बस रहने दीजिए, मै जा रहा हूँ।

गोकुल– कबीर की सच्चाई का पर्दाफाश बिना किए ही.....!

परम्परागत ब्राह्मण – भाई हम यह सब नहीं समझते है। बहतर होगा कि आप हमें कबीर के साथ न उलझाएं।

गोकुल– हाँ आप इसकी आलोचना तो करते हैं लेकिन आप इसकी समीक्षा से दूर भाग रहे हैं। यह ठीक रहेगा कि आप इसके प्रयास को समझे और तब इसकी समीक्षा करें। (....गोकुल कुछ क्षण रूककर अपनी बात आगे बढ़ाते है–) नगर के बाहर पहाडी के नीचे हमने एक विचार मंथन केन्द्र बनाया है। अच्छा होगा कि आप सभी हम लोगों के इस प्रयास का हिस्सा बनें।

परम्परागत ब्राह्मण – ठीक है, चलिए देखेगें कभी! .....और वह सज्जन वहां से चले जाते हैं। (.....बाद में कबीर के वह साथी गोकुलनाथ जी कहते हैं–)

गोकुल– कबीर हमें अपने केन्द्र का नाम 'ज्ञानयज्ञ केन्द्र' रखना चाहिए। दरअसल में हम लोग इस केन्द्र पर समाज विज्ञान का जो अनुसंधान कर रहे हैं वह एक प्रकार का ज्ञानयज्ञ ही है और ज्ञानयज्ञ को समाज के लिए श्रीकृष्ण ने भी सभी यज्ञों से ऊपर बताया है।

कबीर– यह तो अच्छा सुझाव है गोकुल। इस पर हमे अन्य साथियो से भी चर्चा करनी चाहिए। (.....कबीर एक बार चुप होकर पुनः कहता है–)..... मेरे दृष्टिकोण में आधुनिक युग में ज्ञानयज्ञ का अर्थ समाज व्यवस्थाओं का अनुसंधान भी है। लोगों को यह समझना चाहिए कि हर युग में एक जैसी व्यवस्थाओं के अनुसार जीवन निर्वाह नहीं हो सकता है।

———————————

दृश्य–7

पात्र– सूत्राधार, मोहन बाबू, हरि बाबू, कबीर

नेपथ्य से सूत्रधार–

हो चुका जुर्म जब जायज बन जाए,
ऐसा यथार्थ कभी न आए,
मै किसे नालायक कहूँ और किसे मुनासिब
इस वेदना से आज मन उक्ताए.....!

समय बीतता चला जाता है। देश को आजादी मिलने के बाद की पीढ़ी जवान हो जाती है। इसे गुलामी के अनुभव तो नहीं होते लेकिन गुलामी के दौर के जोर–जुल्म को सहकर आजादी का अनुभव करने वाली पीढी का जीवंत मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अनुभव हमारे लिए नियति द्वारा प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों में से होता है। समयानुसार अनेक लोग अंग्रेज सरकार तथा भारत की चुनी हुई सरकार की कार्यप्रणाली की तुलना करने लगते हैं कि किस सरकार का कौन सा निर्णय या कार्यप्रणाली तुलनात्मक रूप में ठीक सिद्ध होता और कौन सा गलत ! समीक्षा के दृष्टिकोण से देखा जाए तो एक जनता द्वारा चुनी हुई सरकार के निर्णय या कार्यप्रणाली किसी तानाशाही या बाहुबल के आधार पर स्थापित सरकार की कार्य प्रणाली की तुलना में जनता के अधिक करीब और पारदर्शी होनी चाहिए। जाहिर है एक चुनी हुई सरकार के निर्णय समाज के प्रति ज्यादा संवेदना रखने वाले होने चाहिए। लेकिन मौजूदा लोक मानस की सुध लेते हैं तो यह सिद्ध होता है कि आजाद भारत की सरकार और समाज के बीच दूरी बढ़ती जा रही होती है। देश की ऐसी सामाजिक दशा पर रामानुजगंज का ज्ञानयज्ञ केन्द्र सतत अध्यन कर रहा होता है। केन्द्र पर आयोजित एक सम्मेलन मे यह प्रश्न उठता है –

मोहन बाबू– देश में अपने ही लोगो द्वारा अपने ही लोगों की चुनी हुई सरकार है फिर भी पहले की तुलना में समाज का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है कबीर! क्या हमें देश की व्यवस्था चलने वाले लोगों की नीयत पर सवाल नहीं उठाने चाहिए ?

कबीर– जब शासक और शासित के बीच की दूरी बढ़े तो समझा जाना चाहिए कि व्यवस्था चलाने वाले लोग लोकतान्त्रिक नहीं बल्कि तानाशाही प्रवृत्ति के हैं तथा अपनी जिम्मेदारियों के प्रति लापरवाह हैं। लेकिन प्रश्न यह भी है कि आजाद भारत में किसी सरकार का नहीं बल्कि एक संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान का शासन है। ऐसी दशा में जनता अपनी व्यवस्था चलाने के लिए जिन लोगो का चुनाव करती है सरकार के रूप में उन्हें संविधान की मर्यादाओं में रहकर ही कार्य करना होता है।

मोहन बाबू– तो क्या जनता को खुद द्वारा चुने गए इन लोगो पर कोई प्रश्न नही उठाना चाहिए.....(सम्मेलन में पधारे मोहन बाबू दक्षिणपंथी वैचारिक धरातल के व्यक्ति होते हैं।)

कबीर– मैं ऐसा नही कह रहा हूँ मोहन बाबू! ..... कबीर प्रश्न का स्पष्टीकरण करते हुए कहता है –.....लोकतन्त्र में ऐसी कोई वजह नहीं हो सकती जिसमें जनता को सरकार के वजूद पर सवाल उठाने का हक नही हो सकता है। इस प्रणाली में जनमत से बड़ा कोई शासक नही हो सकता है लेकिन हमे यह भी सोचना चाहिए कि क्या हमारा संविधान हमारे द्वारा चुनी हुई सरकार को इतनी शक्ति देता है कि वह मनमानी नीतियां बना सके या इस संविधान की बनावट में यह दोष है कि यह अपने निर्माता (समाज) की कसौटी पर खरा नहीं उतर रहा है!

मोहन बाबू– यह तो गम्भीर अध्ययन का विषय है कबीर!

कबीर– हाँ मै भी यही कहना चाहता हूँ। हमें बहुत जल्दी में और बिना सोचे–समझे किसी पर कोई आक्षेप नही लगाना चाहिए।

हरि बाबू– लेकिन मैं यह बात कहुँगा कि आजादी के इस अल्पकाल में देश ने विदेशी आक्रमण भी झेले हैं और हम गरीबी से भी गम्भीर संघर्ष कर रहे हैं । इसलिए हमें देश के संविधान तथा सरकार की कार्यप्रणाली पर इस तरह प्रश्न उठाने से बचना चाहिए। (हरि बाबू गांधीवादी चिंतन धारा के व्यक्ति होते हैं।)

कबीर– लेकिन मेरा विश्लेषण सरकार तथा संविधान के अस्तित्व पर कटाक्ष नहीं है हरि बाबू ! इस विचार मन्थन के जरिए मै तो यह जानना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों हो रहा है? क्योंकि यह सच है कि समाज में धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, गरीब–अमीर, उत्पादन–उपभोक्ता जैसे विषयो के आधार पर वर्ग संघर्ष बढ़ रहा है और यदि हमारे समाज में इन आधारों पर वर्ग संघर्ष बढ़ता चला गया तो यह तो देश के अस्तित्व के लिए खतरा बन जायेगा।

हरि बाबू– लेकिन में यह पुनः कहुँगा कि भारत एक गरीब देश है और इसकी सभी समस्याओं को हल करने के लिए सरकार के पास साधन भी कम हो सकते हैं!

कबीर– लेकिन धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा के आधार पर हमारे समाज में जो वर्ग संघर्ष पनप रहा है उसका कारण तो गरीबी नही हो सकता है। ऐसा होने का कारण या तो हमारी संवैधानिक व्यवस्था का स्वरूप है या फिर सरकार की जवाबदेही का अभाव है!

हरि बाबू– कबीर के तर्क पर हरि बाबू लाजवाब रह जाते हैं। यह बात टालने के अंदाज में कबीर से पुनः प्रश्न करते हैं – आप इसका क्या कारण समझते हैं ?

कबीर– इस विषय में मै अब तक जो कुछ समझा हूँ वह यह है कि हमने अपने समाज का प्रबन्ध करने के लिए व्यवस्था का जो ढांचा बनाया है हमने उसके बनाने के ठीक कारण की विवेचना नही की है या व्यवस्था के विषयों की ठीक परिभाषाएं निर्धारित नही की हैं। जैसे हमने अपने संविधान मे हिन्दू कोड बिल तथा मुस्लिम पर्सनल लॉ जैसे विषयों को या तो कानूनी जामा पहनाने की कोशिश की है या ऐसा कर दिया है। हम ध्यान देना चाहिए कि यदि हम भारत में अलग–अलग मत–मतान्तर के लोगों के लिए अलग–अलग कानूनी व्यवस्था बनाएगें तो सामाजिक समरसता को कैसे महत्त्व मिल सकेगा ?

हरि बाबू– क्या लोगों को अपने मत अथवा धर्म के अनुसार जीने की या अपनी आस्था के प्रति स्वतन्त्रता का अधिकार नही होना चाहिए?

कबीर– निश्चित रूप से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी स्वतन्त्रता प्राप्त होनी ही चाहिए लेकिन व्यक्तियों के किसी वर्ग अथवा समूह को ऐसी स्वतन्त्रता नही होनी चाहिए कि वह आस्था के नाम पर समाज पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने को अपना अधिकार मानने लगे। इस कारण से समाज में धार्मिक वर्ग संघर्ष बढ़ता है। .....इस दशा में मै यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हमारे संविधान निर्माता समाज की परिभाषा की कसौटी के साथ–न्याय नहीं कर सके हैं और व्यवस्था निर्माण के अन्य विषयों के सन्दर्भ में भी यह तर्क इस आधार पर बहुत मत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

हरि बाबू– वह कुछ सोचकर कबीर से गम्भीरता पूर्वक पुनः प्रश्न करते हैं – सरकार आजादी के बाद हिन्दुओ की समग्र सामाजिक व्यवस्था के लिए हिन्दू कोड बिल के रूप में एक उपयुक्त कानून का मसौदा संसद के पटल पर लायी थी लेकिन संसद के अन्दर तथा बाहर देश के अनेक जिम्मेदार लोगों ने न केवल इसका विरोध किया बल्कि इसे एक रूप में संसद में पारित भी नही होने दिया, अभी–अभी इस परिचर्चा में तुमने भी इसे गलत साबित करने की कोशिश की है। क्या ऐसा करना ठीक है?

कबीर– इस विषय का पर्याप्त अध्ययन करने के बाद ही मै यह कह रहा हूँ कि मेरी नजर में हिन्दु कोडबिल यदि कानून का रूप धारण कर लेता तो इसके दो परिणाम होते, एक तो यह कि यह कानून सनातन जीवन पद्धति को इस्लाम के जैसी बन्द अथवा कठोर संगठनवादी धर्म पद्धति में बदल देता और दूसरा यह कि यह विषय भारत की सामाजिक चिन्तन धारा से समान नागरिक संहिता जैसी सर्व उपयुक्त अपेक्षा को मिटा देता!

हरि बाबू– लेकिन क्यो....?

कबीर– क्योंकि बन्द निकाय लोगों की स्वतन्त्रता को इसलिए महत्व नहीं दे सकते हैं कि उनके स्वतन्त्र होने पर किसी भी बन्द व्यवस्था का अस्तित्व स्वतः ही मिट जाएगा।

देश मे समान नागरिक संहिता का आगमन धार्मिक तथा जातीय संगठनवाद का तो समूल नाश कर देगा और हमारे संविधान निर्माताओं ने इस महत्वपूर्ण विषय को त्यागकर संविधान में हिन्दु कोड बिल तथा मुस्लिम पर्सनल ला जैसे विषयों को स्थापित करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। क्या इसे उपयुक्त कहा जा सकता है?

हरि बाबू– तो फिर क्या होना चाहिए....? इस बार हरि बाबू के प्रश्न में झल्लाहट स्पष्ट होती है। वह आगे कहते हैं–आप समान नागरिक संहिता का क्या अर्थ समझते हैं?

कबीर– ज्ञानयज्ञ केन्द्र के अध्ययन के अनुसार आठ ऐसे विषय हैं जिनके आधार पर लोगों को या तो विशेषाधिकार चाहिए या यही वर्ग संघर्ष के पनपने के मूल कारण हैं, ये हैं धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, उम्र, लिंग, गरीब–अमीर, उत्पादक–उपभोक्ता। देश में एक ऐसी समान नागरिक संहिता का निर्माण किया जाना चाहिए जो यह तय करे कि इन आठ आधारो पर न तो किसी को कोई विशेषाधिकार मिले और न किसी की मौलिक स्वतन्त्रता का हनन हो सके! मेरी नजर में तो समान नागरिक संहिता का यही मामूली सा अर्थ है।

हरि बाबू– ये तो तुमने समुद्र को लौटे में उडेलने के जैसी बात कही है कबीर !....हरि बाबू आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते हैं ....यह प्रयास तो हमारे समाज के स्थापित स्वरूप को ही बदल देगा!

कबीर– क्या यह प्रयास समाज को उसके प्राकृतिक स्वरूप से भी दूर कर देगा महोदय ?

हरि बाबू– नहीं, ऐसा नही कहा जा सकता। व्यवस्था से लोगों को जब अपनी–अपनी हितबद्धता के कानूनी अधिकार मिलते है तो ये समाज मे वर्ग संर्घष के पनपने का कारण बन जाते हैं। वास्तव में समाज का समान नागरिक संहिता जैसे समग्र कानूनों के जरिए सर्वोचित प्रवन्धन किया जा सकता है, इसके वर्गो के निजी कानून बनाकर नहीं। वास्तव में गांधी के ग्राम–गणराज्य का सपना भी ऐसे ही प्रयासों से साकार किया जा सकता है। हमे सरकार से इस दिशा में कार्य करने का आग्रह करना चाहिए।

कबीर– इस विषय में आप लोग जैसा भी उचित समझे। ऐसे कार्य तो सभी के तालमेल से होते हैं।

दृश्य–8

पात्र– सूत्राधार, दादा, जगत

नेपथ्य से सूत्रधार–

हमेशा से समाज की यह अवधारणा रही है कि हर आधुनिक दौर बीते हुए जमाने को रूढ और कम जानकार ही कहता आया है। यथार्थ के समाज में ऐसे लोगों की तादाद बहुत कम होती है जो यह स्वीकार करते हैं कि हर बीतता हुआ पल जीवन के सबसे आधुनिक दौर की कसौटी होता है। जो बीत गया और बीत रहा है उसका भी यही सच है और जो आएगा उसका भी यही सच रहेगा। यह दृष्टिकोण जीवन के इस पहलू को भी सिद्ध करता है कि बीते हुए युग में सभ्यता के विकास की जो आवश्यकताएं और इच्छाएं थी वे वर्तमान में आकार लेती हैं वे भविष्य का आधार बनती हैं तथा उसे और महान लक्ष्य पाने के लिए प्रेरित करती हैं। वास्तव मे भूत, वर्तमान और भविष्य को समन्वित बनाए रखने का यह प्राकृतिक मैकनिज्म है। व्यक्ति निहित स्वार्थो के लिए जीवन में जब भी इस तालमेल को नकारने की कोशिश करता है तो समाज का स्वरूप अस्थिर हो जाता है। एक ही घटना के परिप्रेक्ष्य में ऐसा अनेक लोग भी कर सकते हैं और कोई एक भी। लेकिन सार्वभौम समाज में ऐसे लोग भी हमेशा होते है जो इसकी मर्यादा को बनाए रखने का प्रयास करते रहते हैं।. अलवत्ता जीवन की दशाओं का बनना और बिगड़ना ही तो इसकी रोचकता भी है। देश को आजाद हुए एक अरसा बीता गया है। समाज आधुनिकता के बदलाव की एक करवट सी ले रहा होता है। रामानुजगंज के एक घटना क्रम में एक मुस्लिम आदमी एक हिन्दु आदिवासी लड़की से शादी कर लेता है। जिस कारण से शहर का सामाजिक माहौल गर्म होता है। एक उम्र दराज आदमी जगत से कहते हैं–

दादा– ये कैसा वक्त आता जा रहा है बेटा। तुम्हारी नई पीढी ने तो धर्म जाति की मर्यादा को ही ताक पर रख दिया है। अब तो समाज में इज्जत से जीना मुश्किल होता जा रहा है!

जगत– दादा बात सिर्फ इज्जत तक की ही नहीं है बल्कि यह हमारे वजूद के लिए भी चुनौति है।

दादा– (लेकिन दादा बीच में ही बोल पड़ते हैं–) अरे जब इज्जत ही नही रहेगी तो जी कर क्या करेगें? खैर, तुम अपनी बात पूरी करो!

जगत– दादा आपके पास जीवन भर के अनुभव हैं। आप स्थितियों को अच्छी तरह से समझते हैं। मै आपको अवगत कराना चाहता हूँ कि इस कारण से दो समस्याएं हमारे सामने आएगी, एक तो यह कि इन लोगों की यह कोशिश हिन्दु समाज की बनावट को कमजोर करेगी। क्योकि जब हमारी लड़कीयां इन लोगों से शादी करेगीं तो हमारा आबादी सन्तुलन बिगडेगा, दूसरे आप जानते होंगे कि सरकारी कानून के मुताबिक आदिवासियों की जमीन–जायदाद कोई दूसरे धर्म–जाति का आदमी खरीद नहीं सकता है। लेकिन कानून यह भी है कि किसी दूसरी धर्म–जाति में शादी करने से किसी भी आदमी को सरकारी आरक्षण के तहत धर्म–जाति के बारे में मिलने वाले फायदे खत्म नहीं होते है। यह आदमी अपनी औरत को सामने करके गरीब–कमजोर लोगों की जमीन जायजाद हडपेगा और वह हक इसकी औलाद को चला जाएगा जो कि मुस्लित ही होगें।

दादा– लेकिन यह सब रोकने के लिए तो सरकार ने कानून बनाए हैं।

जगत– दादा आप अनुभवी हैं आप जानते ही होगें कि चालाक लोग अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए सरकारी कानूनों का किस तरह इस्तेमाल करते हैं! यह किस्सा भी इसी तरह साबित होनें वाला है।

दादा– क्या ऐसा वाकई हो सकता है जगत!

जगत– ऐसा ही होगा दादा और आने वाला जमाना देखेगा कि यह लोग बहुत आसानी से समाज की धार्मिक स्थिति को बदल देगें और हमारी आने पाली पीढ़ीयां हमें कोसेंगी।

दादा– ये तो तुम गजब की बात बता रहे हो जगत! अगर ऐसा हुआ तो आने वाले समय में हमारे लोगों के सामने बहुत सी मुश्किलें आ सकती हैं!

जगत– हाँ दादा मै तो हफीज के इस काम को अपने जाति धर्म के लिए संकट मान रहा हूँ। आज हफीज ने यह कोशिश एक आदिवासी लड़की के साथ की है कल समाज के दूसरे वर्गो के साथ भी ऐसा ही होगा!

दादा– आजादी के वक्त धर्म के नाम पर देश बट गया और यही संकट बाकी भी रह गया। गांधी बाबा और उनकी बनाई सरकार ने देश और समाज के साथ अच्छा नही किया!

जगत– हाँ दादा बड़े लोगों की कारस्तानी हमेशा छोटे लोगो को भरनी पड़ती है।

दादा– लेकिन हम रामानुजगंज में ऐसा नही होने देगें, पंचायत का आहवान करो। यह समस्या शहर के हर खास–ओ–आम के सामने रखी जाएगी और हाँ पंचायत में लड़की पक्ष भी अपनी बात रखेगा, कही ऐसा तो नहीं कि वह लोग इस घटना से मुकर जाएं!

जगत– नहीं दादा मैने उन लोगों से भी बात कर ली है सब इस काम के विरोधी हैं।

दृश्य–9

पात्र– दादा, जगत, सरपंच, हफीज, फुलवारी, रामसेवक, हफीज के पिता, फुलवारी के पिता, कबीर, सुलेमान, एक बुजुर्ग

(पंचायत घर का दृश्य)

(और दादा पंचायत के सामने पूरी स्थिति रखते है! पंचायत में सभी पक्ष और वह दम्पत्ति भी मौजूद होता है। सरपंच हफीज से पूछते हैं–)

सरपंच जी– यह बताओ हफीज तुमने समाज की मर्यादा क्यो तोड़ी है? जबकि इस लड़की तथा तुम्हारी उम्र में ज्यादा अन्तर है।

हफीज– बस हम दोनो एक दूसरे को बहुत पसन्द करते हैं सरपंच जी।

सरपंच जी– और लड़की तुमने ऐसा क्यों किया?

फुलवारी– बस हमसे तो इन्होंने ऐसा करने के लिए कहा था कि दोनों मिलकर अच्छी जिन्दगी जिएगें।

सरपंच जी– क्या तुम्हारी ऐसा करने की मर्जी नहीं थी। (....लड़की सरपंच जी के इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं देती है। सरपंच जी हफीज से पुनः कहते हैं–) देख रहे हो हफीज तुम गलत साबित होते जा रहे हो दुसरे समाज और फुलावरी के माता–पिता भी इस शादी के विरोधी हैं। तुम्हारा यह कार्य शहर की शान्ति के लिए खतरा बन सकता है!

(इस बार हफीज चुप रह जाता है। सम्भवतः उसके पास प्रश्न का उत्तर नहीं होता है। सरपंच जी पुनः बोलते हैं–)

सरपंच जी– तुम्हें जवाब देना होगा हफीज। रामानुजगंज इतना बड़ा शहर नही है जो यहाँ ऐसी नालायकी छुपायी जा सके। दादा और जगत ने पंचायत को तुम्हारे बारे में और भी जानकारी दी है। तुमसे ऐसा करने के लिए किसने कहा है?

हफीज– नहीं सरपंच जी हमसे ऐसा करने के लिए किसी ने कुछ नही कहा है!

रामसेवक– अरे इससे इतनी नरमी से बात मत कीजिए सरपंच जी। आज हफीज ने बहला–फुसलाकर एक हिन्दू आदीवासी लड़की की इज्जत पर दाग लगाया है कल कोई और मोमिन हिन्दु समाज की किसी और लड़की पर नजर डालेगा। (... भीड से रामसेवक की आवाज आती है, वह आगे कहता है–) इन लोगों की यह हरकत बर्दाश्त नहीं की जाएगी सरपंच जी। अगर हफीज यहाँ दिखायी दिया तो समझ जीलिए कुछ भी हो सकता है।

सरपंच जी– धैर्य रखो, रामसेवक पंचायत मुनासिब फैसला लेगी!....

ह0 पिता जी– इस बार हफीज के पिता कहते हैं– हम पंचायत से एक दरख्वास्त करना चाहते है हुजुर!

सरपंच जी– आपके बेटे ने तो अच्छा काम किया ही नही उल्टे आपने समाज के जिम्मेदार लोगों को इसकी जानकारी भी नहीं दी। यह पंचायत तो फुलवारी के पिता, दादा और जगत के आग्रह पर बैठी है!

ह0 पिता जी– मैं अपनी गलती मानता हूँ हुजुर। डर और शर्म से मारे मै घर से नही निकला। लेकिन मै और मेरा परिवार फुलवारी से सारे सम्बन्ध तोड़कर उसे उसके पिता के घर तक पहुँचा देगें।

फु0 पिता जी– लेकिन इस अपमान के बाद समाज़ में मेरी लड़की को कौन अपनाएगा हुजुर। (.....इस बार फुलवारी के पिता कहते हैं।)

सरपंच जी– जवाब दो मियां, अगर कोई तुम्हारी लडकी के साथ ऐसा करता तो तुम्हे क्रोध न आता। आप मानिये कि यह गम्भीर समस्या है। एक अन्य पंच ने कहा। वह आगे कहते है–फिर भी हमें किसी नतीजे तक तो पहुँचना ही होगा।

जगत– पंचायत को किसी नतीजे तक पहुँचना ही है सरपंच जी लेकिन हफीज की इस गलती के लिए इसे कोइ ठोस दण्ड अवश्य दिया जाना चाहिए। वरना दूसरे लोग भी समाज में ऐसी गलतियां करेंगे ही। ..इस बार जगत पंचायत से अपनी बात कहता है।.....सभी पंच आपस में मशविरा करते है कि जगत ने ठीक कहा है।

(इसी बीच कबीर पंचायत से आग्रह करता है–)

कबीर– अगर पंचायत की अनुमति हो तो इस बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूँ!

सरपंच जी– कहो कबीर!.... पंचायत अनुमति देती है।

कबीर– इस बारे में मेरा कहना यह है महोदय कि रामानुजगंज में हिन्दु तथा मुसलमानों के साथ सभी धर्मों के लोग शान्ति एवं समभाव से रहते हैं। किन्हीं छुट–पुट घटनाओं को छोड़ दिया जाए तो यहां मजहबी फसाद को बढावा देने वाले लोग नही रहते हैं। मैं भी हफीज और फुलवारी के इस कृत्य को ठीक नहीं मानता हूँ क्योंकि इससे समाज का सौहार्द बिगड़ने के कारण पनपते हैं। लेकिन पंचायत इन्हें ऐसा कोई दण्ड भी नहीं दे सकती है कि कोई दूसरी ही समस्या पैदा हो जाए! मेरे विचार से इस घटना के हल के लिए तथा समाज में ऐसा होनें से रोकने के लिए समाज को दो प्रयास करने चाहिए।

सरपंच जी– वह क्या कबीर....?

कबीर– एक तो यह कि अगर फुलवारी और हफीज के परिवार सहमत हैं तो इन दोनों के सम्बन्ध खत्म कराकर फुलवारी को उसके पिता के पास पहुँचा दिया जाए। इस बारे में पंचायत उचित समझें तो हफीज पर कोई आर्थिक दण्ड भी लगाया जाय जिससे फुलवारी की शादी करने में इसके पिता को सहायता मिले। समाज में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए मेरे पास दुसरा सुझाव भी है।

सरपंच जी– उसे भी बताओ कबीर....!

कबीर– सरपंच महोदय, उपस्थित गणमान्य तथा अन्य सभी लोगों से मेरा अनुरोध है कि मेरा यह सुझाव ध्यान से सुनें और उचित निर्णय लें। यद्यपि मै यह मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति को स्वतन्त्रता से जीने का अधिकार होता है लेकिन कोई भी व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता के लिए समाज पर या अन्य लोगों पर अपना निर्णय लाद भी नही सकता है। देश में कानून निर्माण का परिप्रेक्ष्य भी इस बात को गलत नहीं ठहरा सकता है। नए जमाने की स्थिति और देश के कानून के स्वरूप को देखा जाए तो समाज में अन्तर धार्मिक तथा अन्तर जातीय वैवाहिक घटना घटती हैं तो उनमें कई लोग ऐसा होने के पक्ष में होते हैं और कई विरोध में। ऐसी घटनाओं में कभी–कभी अतिशय हिंसा हो जाती है तो कई लोगों का जीवन तबाह हो जाता है। प्रस्तुत घटना के बारे में देखें तो रामानुजगंज का माहौल बहुत गर्म है। भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों और न समाज का माहौल इस तरह बिगड़े इसलिए हमे अपने नगर में ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनानी चाहिए जिसके जरिए ऐसी घटनाओं पर लगाम लग सके।.... कबीर एक बार रूककर पुनः बोलता है––मैने निकट के गुजरे हुए समय में हुई ऐसी कई घटनाओं का निरीक्षण किया है और हफीज की मंशा को भी जानने की कोशिश की है। इस बारे में तमाम हालात समझकर मैं पंचयत से यह आग्रह करता हूँ कि इस पंचायत के जरिए रामानुजगंज के लोगों को अपनी सामाजिक व्यवस्था ऐसी बनानी चाहिए कि यहाँ पर यदि कोई मुस्लिम लड़का हिन्दू लड़की से या हिन्दु लडका मुस्लिम लडकी से विवाह करता है तो लड़के को अपना धर्म परिवर्तन करना होगा। नगर में अन्य धर्मो के विषय में भी ऐसी सामाजिक व्यवस्था होनी चाहिए। मैं यह पुनः कहना चाहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन के बारे में स्वतन्त्रता पूर्वक निर्णय करने का अधिकार रखता है तो समाज की भी यह स्वतन्त्रता होती है कि वह उस व्यक्ति के निर्णय को अपनी जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार करे या न करे। यदि कोई व्यक्ति या उसका परिवार इस व्यवस्था को मानने से इंकार करे तो उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाना चाहिए।

जगत– क्या हमारी इस कोशिश से समाज की यह या इसके जैसी अन्य समस्याएं हल हो सकती है कबीर ?(.....इस बार जगत उससे प्रश्न करता है।)

कबीर– क्या हम इसका कोई और उपाय भी कर सकते हैं, यदि हाँ तो बताइए जगत बाबू?

जगत– पंचायत को हफीज़ को दण्डित करना चाहिए!

कबीर– और यदि पंचायत ने इसे दण्डित करने की कोशिश की तो सरकार इसके संरक्षण के लिए आ जाएगी....!

जगत– क्या सरकार या ऐसे कानून के डर से हिन्दुओ का अपनी सामाजिक परिस्थितिकी की चिन्ता छोड देनी चाहिए कबीर बाबू!

कबीर– सभी को अपने धर्म–जाति और संस्कृति की चिन्ता करने का हक होता है जगत बाबू लेकिन जब समाज के वजूद का सवाल आए तो हमें इसकी चिन्ता सबसे पहले करनी चाहिए।

जगत– क्या भारत में यह जिम्मेदारी सिर्फ हिन्दुओं की ही है? आप सभी ध्यान रखिए कि धर्म के लिए देश बाटा जा चुका है!

कबीर– बिल्कुल यह सच है लेकिन इस सच को अपनाकर हममें से कोई भी शान्ति से जी नही सकेगा! इस नुकसान की भरपायी यही हो सकती है कि हम समाज को किसी और ऐसे नुकसान के मुहाने तक न ले जाए!

जगत– और ऐसा कर कौन रहा है, क्या तुम्हें हफीज की योजना की जानकारी नही हैं?

कबीर– मुझे इसकी जानकरी है और मैंने पंचायत के सामने सोच–समझकर यह सुझाव रखा हैं। मुझे यह विश्वास है कि यदि मेरे सुझाव को माना गया तो निश्चित रूप से इस तरह के धर्म परिवर्तन पर रोक लगेगी!.....और इस बार पंचायत में खामोशी छा जाती है। इसे तोड़ते हुए दादा कहते हैं–

दादा– कबीर के दोनों सुझाव अच्छे हैं सरपंच जी। नगर के मुस्लिम समाज में सुलेमान मियां को जिम्मेदार आदमी माना जाता है इनसे यह पूछा जाना चाहिए कि क्या इन सुझावों को रामानुजगंज की व्यवस्था के रूप में मंजूर कर लिया जाए!

सुलेमान– आप कैसी बात करते है दादा, हम नगर भर के लोगों का आपस में भाई–बन्दगी का नाता है। हम सभी को इसे निभाना चाहिए। मै हफीज के काम को जायज नहीं मानता। इसने समाज की मर्यादा तोड़ी है तो अब इसे अपना धर्म छोडना होगा ताकि हम लोगो पर वह इल्जाम साबित न हो सके जो हमारे ईमान पर लगाने की कोशिश की गई हैं। दीन–ए–इस्लाम में यह नसीहत नही है कि किसी को बहला–फुसलाकर, डराकर एवं जबरदस्ती मोमिन बनाया जाए। मै अपने लोगो की तरफ से पंचायत को यह आश्वासन देता हूँ कि हमें कबीर का सुझाव रामानुजगंज की सामाजिक व्यवस्था के रूप में मंजूर है।

दादा– सरपंच जी ऐसे मामलों में लड़ाई झगड़े की बात करने से बहतर यह है कि हम ऐसी समस्याओं के ऐसे उपाय करें कि समाज में सभी लोग इनके हल करने का जरिया बन जाए। मुझे भी कबीर का यह सुझाव अच्छा लगाक्योंकि जो भी ऐसा करेगा वह अपनी धर्म–जाति का द्रोही बन जाएगा। अगर पंचायत को यह सुझाव मंजूर हो तो इसे नगर की सामाजिक व्यवस्था बना दिया जाए।... दादा, पंचायत के सामने अपना सुझाव रखते हैं।

(दादा के सुझाव के बाद सभी पंच आपस में चर्चा करते हैं तथा निर्णय सुनाने से पहले कहते है–) अगर कोई भी व्यक्ति इस बारे में और कुछ कहना चाहता है तो कहे अन्यथा पंचायत अपना निर्णय सुनाएगी...!

एक बुजुर्ग– बड़े बुजुर्गो के साथ युवाओं ने भी पंचायत में सब बाते साफ–साफ कहीं हैं। हम समझते है कि इस बारे में अब और दलील–अपील की जरूरत नही है सरपंच जी। पंचायत न्याय करे हमारी आपसे ऐसी अपेक्षा हैं। (एक अन्य बुजुर्ग पंचायत से कहते है।)

(पंचायत अपना निर्णय सुनाती है –)

सरपंच जी– पंचायत के सामने सभी लोगों ने अपना–अपना पक्ष रखा है, इसलिए यह कहना ठीक रहेगा कि इस मामले में उचित निर्णय किया जा सकता है। एक ओर जगत बाबू ने दादा से मशविरा करके हिन्दु समुदाय की चिन्ता को पंचायत और समाज के सामने ठीक ढंग से रखा है तो कबीर बाबू ने समाज की इस समस्या के हल के लिए परिपक्व सुझाव दिये हैं। समाज में घट रही घटनाओं से पैदा हुई स्थिति के मद–ए–नजर पंचायत का हिन्दु एवं मुस्लिम समुदाय के जिम्मेदार लोगों को यह मशविरा है कि वे अपने बच्चो का समझाए कि अन्तर धार्मिक एवं अन्तर जातीय वैवाहिक सम्बन्ध बनाने से पहले धार्मिक एवं जातीय कट्टरता का अपने मन एवं समुदाय की मान्यताओं से उन्मूलन करें। बहुदा ऐसे सम्बन्ध भावनात्मक ज्वार की तरह होते है, तूफान आता है और कई जिन्दगियों को तबाह करके निकल जाता है। दूसरी ओर हमारा समाज तो किसी अपवाद को छोड़कर ऐसे वैवाहिक सम्बन्धों को स्वीकारने की सोचता भी नहीं है। फिर भी पंचायत यह समझती है कि ऐसे सम्बन्धों का होने से रोकना कोई बहुत सरल कार्य नही है। ऐसा करने वाले तथा इसका विरोध करने वाले सभी लोग सोचें कि यह ठीक है कि सभी को अपनी जिन्दगी आजादी से जीने का हक होता है लेकिन किसी के लिए भी आजादी के मायने उसके द्वारा परिवार और समाज को प्रताडित करना नही होता। पंचायत हफीज की उस मंशा का जिक्र भी करना उचित समझती है जिसका जिक्र जगत और दादा ने पंचायत से किया है। इस मामले में दोनों समुदाय के लोगों को अच्छी तरह समझना चाहिए और यदि ऐसा कुछ है तो अपनी सामाजिक जिम्मेदारी मानकर इसे बढ़ने से रोकना चाहिए। इन सब बातो के मद–ए–नजर पंचायत दादा एवं सुलेमान मियां जैसे जिम्मेदार बुजुर्गो के मार्गदर्शन और आप सब की सहमति से कबीर के दोनों सुझावों को अपने निर्णय के रूप में मंजूर करती है। ऐसा करने वाले नगर के जो भी लोग हैं या तो वे पंचायत के निर्णय को मानेगें या फिर नगर छोड़कर चले जाएंगें। ऐसा करने वाला जो कोई भी यह निर्णय नही मानेगा उसका शत–प्रतिशत सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा और ऐसा करने वाले लोगों का जो कोई भी साथ देगा उसे भी बराबर का दोषी माना जाएगा। हमारे नगर का सामाजिक सम्भाव बना रहे समाज के लिए इससे अच्छा और कुछ नहीं हो सकता है। (....और इस निर्णय के साथ सरपंच जी पंचायत स्थगित कर देते हैं।)

दृश्य–10

पात्र– सूत्रधार, जगत, विजय बाबू

नेपथ्य से सूत्रधार–

(समय के साथ बात आगे बढ़ चलती है। रामानुजगंज के ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर हो रहे इस सामाजिक अनुसंधान की आवाज समाज के पटल पर फैलने लगती है। कबीर का परिवार उसका विवाह कर देता है। जीवन की निजी तथा सामाजिक अवश्यकताएं समय की कसौटी के अनुसार पूरी हो जाती हैं तो जीवन सन्तुलित बन जाता है। व्यक्ति के कृत्य उसकी ख्याति के लिए उत्तरदायी होते हैं। समर्थन विरोध, आलोचना, समीक्षा यह सब व्यक्ति के नहीं होते बल्कि उसके कृत्यों के होते है लेकिन यह नियति है कि कृत्य तो व्यक्ति को एक उपकरण की भांति करने ही होते हैं। अब जो जैसे कृत्य करेगा समाज उसे वैसा ही परितोष देगा। समाज में व्यक्ति का चरित्र नायक अथवा खलनायक के रूप में उसके कृत्य ही सिद्ध करते हैं। लेकिन कई बार व्यक्ति ऐसी धारणाओं में बंधकर भी रह जाता है जिनका कोई तार्किक आधार नहीं होता। ऐसे में व्यक्ति उपस्थित सामाजिक दृश्य का समुचित मूल्यांकन नही करता और नाहक में अनेक लोगों को अपना विरोधी मान लेता है।....कबीर के बचपन का सहपाठी जगत भी ऐसी ही कुछ भ्रांतियों को अपनी धारणा बना लेता है।.....वह एक दिन अवसर देखकर ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर पधारे एक बाहरी सज्जन से कबीर के विषय में संवाद करता है)

जगत– आप हमारे क्षेत्र के रहने वाले तो दिखते नहीं है!

विजय बाबू– जी हाँ मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ और मेरा ना विजय शंकर है और मैं समाजशास्त्र का शिक्षक भी हूँ।

जगत– क्या आप भी हमारे नगर के तथाकथित ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर पधारे हैं?

विजय बाबू– हाँ आया तो वहीं हूँ लेकिन मुझे तो उस केन्द्र को तथाकथित कहने की बात ठीक नहीं लगती!

जगत– हाँ मुँह पर राम, बगल में छुरी। जब सारा भेद जानोगें तब समझोगें!

विजय बाबू– आप कहना क्या चाहते हैं?

जगत– यह कि आप ज्ञानयज्ञ की गतिविधियों को जानकर भ्रम का शिकार न हों इस केन्द्र के निर्माता के असल जीवन को भी जानें।

विजय बाबू– आप जो कुछ कहना चाहते हैं साफ–साफ कहें!

जगत– इस तथाकथित ज्ञानयज्ञ केन्द्र का संचालक कबीर ब्लैक मार्केटिंग करता है, व्यापार में टैक्स चोरी करता है, घूसखोरी को सुविधा शुल्क बताता है, खुद को गर्व से दो नम्बरी घोषित करता है और समाज सुधार की बाते करता है। बाहर से आए हुए लोगों के सामने आजादी की बड़ी–बड़ी बात करता है और अपने परिवार तथा पास के लोगों के साथ तानाशाही का व्यवहार करता है। क्या अजब बात है कि आप जैसे सभी लोग तथा कई स्थानीय लोग भी पता नहीं क्यों उससे इस कद्र प्रभावित हैं कि उसकी गलतियों की समीक्षा तक भी नहीं करते हैं? मुझे तो वह दुनिया का सबसे अजीब किन्तु मौका परस्त समाज सुधारक लगता है।

विजय बाबू– ऐसा नहीं है महोदय! कबीर से बहुत समय से मेरा वैचारिक सम्बन्ध है। गुण–दोष सभी लोगों में होते हैं लेकिन उसके जो दोष आपने मुझे बताये हैं मुझे उन सबकी स्पष्ट जानकारी है और कबीर ने अपनी जीवन शैली को मेरे जैसे तमाम लोगों से छुपाने का कभी प्रयास नही किया है। उसका यही व्यवहार उसे हम लोगों के बीच विश्वसनीय बनाता है। दूसरे मेरी जानकारी में ऐसी कोई बात नही आयी है कि उसने कभी खुद को समाज सुधारक घोषित किया हो!

जगत– लेकिन क्या उसके इन सब कृत्यों को ठीक कहा जा सकता है जबकि वह संदेश तो समाज–सुधार काही देने का प्रयास करता हैं महोदय!

विजय बाबू– वास्तव में व्यवहार जगत में किसी भी व्यक्ति के ऐसे कृत्यों को ठीक नही कहा जा सकता हैं, किसी भी सामाजिक व्यक्ति को ऐसे कार्यो से बचना चाहिए। लेकिन व्यवस्था की संरचना और व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ती के लिए निर्मित होने वाली जीवनचर्या का द्वन्द देखते हैं तो हर आदमी अपने आप में दोषी बनता

जा रहा है। समाज के लिए यह द्वन्द भयानक साबित होगा......।

जगत– लेकिन सच तो यह है कि समाज की परिस्थितियों के पीछे व्यक्ति के अपराध को तो नही छुपाया जा सकता। जिन कसौटियो पर कबीर गलत है, उसे गलत ही कहा जाएगा!

विजय बाबू– बिल्कुल! यह सच है लेकिन मैं यह बात पुनः कहुँगा कि कबीर के जीने खाने का ढंग व्यवस्थाओं के दुष्प्रभाव से वैसे ही ग्रसित है जैसे पूरे समाज का है। व्यवस्था जब व्यक्ति की प्राकृतिक स्वतन्त्रता का समुचित प्रबन्ध करती है तो समाज का दृश्य फलिभूत होता है और जब ये उसकी स्वेच्छाचारिता पर अंकुश नही लगा पाती है तो समाज में उत्पात मचता है। आप इसी कारण से परेशान हैं। लेकिन मुझे कबीर का प्रयास इसलिए पसन्द है कि वह व्यवस्था के इन उलझावों में मुक्त होने का कोई रास्ता भी बताता है जबकि अन्य लोग व्यवस्था की खांमियों का अपने लिए इस्तेमाल करके चुप हो जाते हैं।

जगत– तो क्या भ्रष्टाचार भारत के लोगों का नियति बन कर रहा जाएगा महोदय?

विजय बाबू– जब असामाजिक धारणाओं को समाज व्यवस्था की विधियों के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है तब समाज में ऐसी ही समस्याएं उबरती हैं जगत बाबू! यदि भारत के लोगों को व्यवस्था जनित भ्रष्टाचार से मुक्त होना है तो इसे अपनी व्यवस्था का सामयिकीकरण करना ही होगा!

जगत– क्या स्वतन्त्र भारत का संविधान भी व्यवस्था के सामयिक चरित्र की कसौटी पर खरा नही उतरता है?......इस बार जगत के संवाद में तीक्ष्णता होती है।

विजय बाबू– जो इस सच से समाज को अवगत कराने के प्रयास कर रहा है उसे तो आपने अपना शत्रु मान लिया है।...... विजय बाबू एक बार चुप होकर पुनः बोलते हैं – कबीर की गलतियों को गलत न मानने के लिए मै मजबूर नही हूँ लेकिन उसके गुणों में ठोकर मारना भी मै उचित नहीं मानता!..... इस बार जगत अवाक रह जाता है। विजय बाबू अपनी आत आगे बढ़ाते हैं – व्यवस्था के स्वरूप को सामयिक बनाया जाना चाहिए। इसका ढाँचा ऐसा हो कि हर हाल में देश का समाज, व्यवस्था की संस्थाएं और संगठन तथा व्यक्ति अपने कार्यो के प्रति उत्तरदायी बने तथा समाज की जीवन प्रणाली वर्चस्वाद से मुक्त हो!

जगत– क्या यह सब हो सकता है?

विजय बाबू– कबीर हमारे सामने व्यवस्था का एक माडल रख रहा है। मुझे पता चला हैं कि राज्य में पंचायत चुनाव नजदीक हैं आप लोग उसे नगर पंचायत का प्रमुख बनाकर अपनी बात साबित करने की एक चुनौती दिजिए!

जगत– यह आप ठीक कह रहे हैं!.... विजय बाबू की बात सुनकर जगत गम्भीरता से सोचता है –विजय बाबू का सुझाव तो अच्छा है। अगर कबीर यह चुनाव लड ले और इसे हार जाए तो मुझे नगर भर में स्थापित होने का अवसर मिल जाएगा। क्योकि चुनावी हार और खर्चा उसे समाज से दूर ही करेगें!

विजय बाबू– किस सोच में डूब गए जगत बाबू!......विजय बाबू उसे टोकते हैं

जगत– बस इतना कि अगर आप लोग कबीर को इतना योग्य मानते हैं तो उसे नगर पंचायत का प्रमुख जरूर बनाया जाना चाहिए।

विजय बाबू– तो फिर सोचना कैसा, उसे चुनाव जिताइए और कहिए कि वह अपनी योजना के मुताबिक नगर की जनता का हित करे!

जगत– लेकिन प्रश्न तो यह है विजय बाबू कि कबीर को चुनाव लडने में कोई दिलचस्पी नही है और मेरे कहने से वह ऐसा करेगा नहीं! हम लोग तो उसे वोट दे सकते हैं चुनाव लडने के लिए आप तैयार कर लीजिए।

विजय बाबू– ठीक है अभी मै कुछ दिन के लिए रामानुजगंज में हूँ। कोशिश करता हूँ।

जगत– जी अच्छा.....!

(वे दोनों फिर मिलने का वादा करके एक दूसरे से विदा लेते हैं।)

(जाते–जाते जगत सोचता है)–

समाज में कबीर को नीचा दिखाने का यह अच्छा मौका हो सकता है। मै रामानुजगंज में स्थापित होने के लिए जब भी कोई मौका तलाशता हूँ तो कबीर उसे बेकार कर देता है। इस बार मै उसे पता भी नही चलने दूँगा और अपना मकसद भी हासिल कर लूंगा!

———————————

दृश्य–11

पात्र– कबीर, गोकुल,

नेपथ्य से सूत्रधार–

(जगत, कबीर के विरोधियों तथा अपने भरोसेमन्द लोगों के सामने अपनी योजना रखता है। दूसरी ओर कबीर, विजय बाबू, दादा तथा नगर के अन्य जिम्मेदार लोगों के कहने पर इस घोषणा के साथ चुनाव लडने के लिए तैयार हो जाता है कि चुनाव जीतने पर हम लोग प्राथमिकता के आधार पर नगर की सुरक्षा, अपराध मुक्ति और समाज सशक्तिकरण के काम करेगें। अन्य कोई भी काम इन जिम्मेदारियों के पूरा करने के बाद किया जाएगा।.......और इस घोषणा के साथ कबीर नगर पंचायत के चुनाव में उतर जाता है। वह एक चुनाव सभा में एक सवाल का जवाब देते हुए कहता है)

कबीर– समाज में न्याय, सुरक्षा शान्ति और विकास के लिए काम करना हर जनप्रतिनिधि की जिम्मेदारी होती है। इसके लिए हमे समाज को मजबूत बनाना होगा और समाज मजबूत तब बनेगा जब यह धर्म–जाति के झगड़ो से मुक्त होगा, छोटे–बड़े और ऊँच–नीच का फर्क नही किया जाएगा। नगर की जनता से मेरा यह साफ कहना है कि अगर समाज मजबूत होगा तो न तो नेता और अधिकारी मनमानी कर सकेगें और न बुद्धिजीवी केवल अपने हित का काम कर सकेगें।

(और चुनाव का माहौल कबीर के पक्ष में जाता हुआ दिखायी देता है। जगत इस परिस्थिति को अपने लिए नुकसान देय मानता है। वह अपने साथियो से मिलकर योजना बद्ध तरीके से कबीर के चुनाव को खराब करने की कोशिश करता है। एक दिन चुनावी तैयारी के बीच कबीर का साथी गोकुलनाथ उसे सूचना देता है–....)

गोकुल– जगत, चुनाव में हमें धोखा दे रहा है!

कबीर– क्या यह खबर बिल्कुल ठीक है गोकुल!

गोकुल– बिल्कुल सौलह आना पक्की खबर है। यह जानकर मैंने तो जगत को मौके पर ही डाटना चाहा था पर सोचा कि पहले तुम्हे बता देता हूँ।

कबीर– तुमने ठीक किया गोकुल! अब हमे यह ध्यान रखना है कि हमे जगत को यह एहसास नही होने देना है कि हमे उसकी योजना का पता चल चुका है और दूसरे हरहाल में उसके असर की वोटो के बराबर वोटो की भरपायी करनी है।

गोकुल– यह कैसे हो सकेगा कबीर?

कबीर– वोटो की खरीद–फरोक्त करके और क्या?

गोकुल– क्या यह बात जायज होगी?

कबीर– नही, लेकिन ऐसा न करने पर हमें चुनाव हारने के लिए तैयारी हो जाना चाहिए!

गोकुल– यह तो बहुत पेचीदा मामला है। हमे इस धोखादड़ी के लिए जगत को ही डाटना चाहिए!

कबीर– हम इस परिस्थिति में कोई बात साबित नही कर पाएगें गोकुल, उलटे लोग हमें ही गलत कहेगें। इस समस्या का केवल एक ही समाधान है कि अनैतिकता का इलाज अनैतिकता ही होता है। शरीफ बनोगे तो ठगे जाओगे।

गोकुल– क्या उन बड़े–बड़े लोगों को भी जगत की इस हरकत की जानकारी नही दी जानी चाहिए, जिनके साथ जगत ने तुम्हे चुनाव लडने के लिए कहा था!

कबीर– हमें चुनाव के बाद ऐसा करना चाहिए?

गोकुल– कुछ क्षण रूककर गोकुल उससे दोबारा कहते हैं....कुछ सोचो कबीर, कोई रास्ता निकालों, भला वोट खरीदकर जीतना हमारे चरित्र की कसौटी कैसे हो सकता है?

कबीर– इस नए तरक्की पसन्द जमाने में सियासत की कसौटी चरित्र नही है गोकुल बल्कि मौका परस्ति है। शरीफ लोगों पर धूर्त इसलिए ही शासन कर पाते हैं। जगत धूर्त है लेकिन अब उसके जाल में फंसना है कि नही यह हमारी समझदारी पर निर्भर करता है। फंसेगें तो अपने कठपुतली उम्मीद्वार के जरिए वह हम सभी पर शासन करेगा और उसके जैसी सोच अपनाएगें तो हो सकता है हम उन योजनाओं को इमानदारी से लागू कर सके जिन्हें हमने घोषित किया है!..... फिर भी अपने सभी भरोसेमन्द साथियों से यह जरूर समझेगें कि क्या इस धूर्तता की कोई और व्यावहारिक काट भी हो सकती है?

गोकुल– ठीक है तुम जैसा कहते रहोगे हम वैसा करते रहेगें, लेकिन अब चुनाव का परिणाम हमारे ही पक्ष में आना चाहिए!

कबीर– कोशिश करना हमारी जिम्मेदारी है!.....और कबीर इतना कहकर चुप हो जाता है।

———————————

दृश्य–12

पात्र– कबीर, नगर अधिकारी,

नेपथ्य से सूत्रधार–

(चुनाव पूरा होता है और कबीर की जीत होती हैं। चुनाव जीतने पर नगरपालिका अध्यक्ष के रूप में जब कबीर अपने कार्यालय जाता है तो मुख्य नगरपालिका अधिकारी स्वागत के साथ उसके अधिकार क्षेत्र तथा उसकी सीमा उसे बताते हैं। वह नगरपालिका के मुख्य अधिकारी से कहते हैं–)

कबीर– हमारे समूह ने केवल नगर की सडको के गड्ढे भरने एवं नालियो की सफाई करने हेतु चुनाव नही है। हमने नगरवासियों को न्याय एवं सुरक्षा मुहैया कराने की घोषणा भी की है, समाज मजबूत बने, हमे लोगों की इस कसौटी पर भी खरा उतरना है। हाँ हम बाद में वे काम करने का भी प्रयास करेगें जो शासन ने हमारे लिए तय किये हैं।

नगर अधिकारी– लेकिन समाज की सुरक्षा और न्याय के लिए सरकार ने अलग से व्यवस्था बनायी है अध्यक्ष महोदय, आपको उसकी चिन्ता नही करनी है!.....नगर अधिकारी, कबीर से कहते हैं।

कबीर– अगर जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि को जनता की सुरक्षा करने की ही जिम्मेदारी नही है तो फिर नगरपालिका अध्यक्ष बनने का क्या औचित्य है? एक चुने हुए प्रतिनिधि को सरकार की गाइड लाइन के मुताबिक राष्ट्रीय पर्व पर भाषण देना है और सरकार द्वारा निर्धारित योजनाओं को लागू करना हैं तो फिर किसी चुनाव की क्या जरूरत है.....! यह किसी लोकतान्त्रिक व्यवस्था का सरूप नहीं हो सकता है!

नगर अधिकारी– यदि ऐसा नही होगा तो जंगलराज आ जाएगा अध्यक्ष महोदय!

कबीर– और यदि ऐसा होता रहा तो समाज को गुलामी से कैसे छुटकारा मिल सकेगा अधिकारी महोदय!

नगर अधिकारी– लेकिन हम तो सरकार के निर्देष के अनुसार ही कार्य कर सकते हैं। हमारी तो यह मजबूरी है।

कबीर– मै यह समझता हूँ.....! कबीर इतना कहकर चुप हो जाते हैं। समय बीतता है। कबीर रामानुजगंज में अपने नगर पालिका के अध्यक्षीय कार्यकाल की अपने साथियों के साथ समीक्षा करते हैं एवं भविष्य की घोषणा के लिए एक जनसभा आयोजित करते हैं–भाईयों करीब डेढ वर्ष पहले आपने मुझे अपनी जिन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए नगरपालिका का अध्यक्ष चुना था मै उन अपेक्षाओं पर खरा नही उतर रहा हूँ, क्योंकि इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए मुझे जितनी शक्ति चाहिए मौजूद व्यवस्था वह शक्ति एक जनता द्वारा चुने गए नगर पालिका अध्यक्ष को नहीं देती है। एक नगरपालिका अध्यक्ष के लिए शासन ने जो कार्य निर्धारित किये हैं उनको करके मै आम जनता को संतुष्ट नही कर पा रहा हूँ। मेरे अन्दर अपनी घोषित जिम्मेदारी पूरी न कर पाने के

कारण एक द्वन्द है जिस कारण से मै असन्तोष से ग्रस्त होता जा रहा हूँ। मै खुद को इस प्रश्न का भी जवाब नही दे पा रहा हूँ कि मै यह कैसे स्वीकार करूं कि मै विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान का उलंघन करूं क्योकि मै ऐसा करता हूँ तो देश के प्रति मेरी निष्ठा पर प्रश्न खड़ा होता है और यदि ऐसा न करूं तो मै आपकी कसौटी पर खरा नहीं उतरता हूँ। यद्यपि मै यह तो स्वीकार करता हूँ कि मै सरकार से पहले उस समाज के प्रति उत्तरदायी हूँ जिसने मुझे नगरपालिका अध्यक्ष बनाया है। इस स्थिति में यह बेहतर होगा कि मै यह पद त्याग दूं और हम सभी ऐसी व्यवस्था बनाने का प्रयास करे कि हमें अपनी समस्याओं का हल करने तथा अपनी जिम्मेदारियों की पूर्ति करने की शक्ति प्राप्त हो। इस आम सभा के माध्यम से मै आप लोगों से यह अपील करता हूँ कि आप मुझे यह पद त्यागने की अनुमति दें।

———————————

दृश्य–13
पात्र– सुत्रधार, कबीर, गोकुल, विजय बाबू, अन्य व्यक्ति

नेपथ्य से सूत्रधार–

(और कबीर अपना पद त्याग देते हैं। वह पद त्याग कर भारत के संविधान का पुनः अध्यन करते हैं तथा यह पाते हैं कि समस्याओं के हल के लिए शक्तिशाली होना आवश्यक है। समय व्यतीत होता है तब तक देश में एक अलग तरह का माहौल बन चुका होता है। कुछ विषयों को लेकर जनता में केन्द्र सरकार के विरुद्ध भयंकर आक्रोश व्याप्त हो जाता है। सरकार समाज की मंसा को समझने से इंकार कर देती है और तानाशाही के रवैये पर उतर आती है। यह ठीक है कि लोग सरकार की तानाशाही के सामने उसकी आलोचना नहीं कर पाते लेकिन जनता का अन्तःकरण सरकार के विरोध में आक्रोश से भर जाता है। इस दरमियान सरकार तब अपनी अनैतिकता के चरम पर पहुँच जाती है जब वह न्यायपालिका के जरिए देश में संविधान द्वारा प्रदत व्यक्ति के मूल अधिकार की परिभाषा को बदलने का घृणित प्रयास करती है। सरकार के इस प्रयास को जानकर कबीर का मन इस विमर्श को टटोलता है कि क्या कोई सरकार व्यक्ति के मौलिक अधिकार पर प्रश्न चिन्ह लगा सकती है और यदि हाँ तो फिर तो सदैव के लिए भारत के प्रांगण से व्यक्ति के मूल अधिकार का अन्त हो जाएगा और फिर कभी भारत के पटल से तानाशाही का अन्त नही किया जा सकेगा। यदि देश में ऐसा हुआ तो यही माना जाएंगा कि इतना गलत तो हमारे साथ विदेशी सरकार भी नही करती! लेकिन भारत की न्यायपालिका देश को सरकार की इस घिनौनी हरकत से तो बचा लेती है पर देश आपातकाल के रूप में विभीत्स और निरकुंश शासन झेलता है। देश भर में समाज का माहौल बहुत खराब हो जाता है। आपातकाल में सरकार अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वयं सेवको, अन्य राजनीतिक संगठनों के नेताओं को गिरफ्तार कर लेती है। इस क्रम में कबीर भी जेल चले जाते हैं। ऐसा करके सरकार अपनी अयोग्यता को छुपाने के लिए समाज को गुलाम बनाने का अनैतिक प्रयास करती है। कुछ समय बाद देश के निरकुंश शासक यह समझते हैं कि उनके इस प्रयास ने उनकी सामाजिक छवि को मृतप्राय स्थिति में पहुँचा दिया है। दुनिया के महत्वपूर्ण देश हमारे इस गलत प्रयास को उचित नही मान रहे हैं और दुनिया भर में हमारी छवि खराब हुई है इससे तो हम अपने हित का कोई परिणाम नही पा सकेगें। करीब दो वर्ष बाद देश से आपातकाल हटा लिया जाता है। देश में चुनाव होते है तो एक नई सरकार बनती है। इसमें कबीर को भी महत्वपूर्ण पद मिलने का प्रस्ताव होता है लेकिन कबीर प्रत्यक्ष पद न लेकर संगठन संचालन का महत्वपूर्ण पद स्वीकार करते हैं। इनसे पूछे जाने पर समाज की समस्याओं को हल करने के लिए यह प्रस्ताव रखते है कि हमें श्रम तथा समाज की आतंरिक सुरक्षा के लिए गृह विभाग चाहिए। इनकी इच्छानुसार इनके समूह को उक्त पद दिये जाते हैं।. ....कबीर तथा इनके साथी रामानुजगंज में यह घोषणा करते है कि अब हम समाज की सुरक्षा तथा न्याय से सम्बन्धित सभी समस्याओं को हल कर देगें। और इनका पूरा समूह अपने काम में लग जाता है।...... शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण शक्ति प्राप्त होने के बाद भी एक अन्तराल के बाद कबीर यह महसूस करते हैं कि समाज की समस्याएं बढ़ रही हैं इससे तो मेरा यह निष्कर्ष गलत साबित होता है कि शक्ति समस्याओं का हल करती है.....।)

(कबीर, अपने मित्र गोकुल से चर्चा करते हैं–)

कबीर– क्या कारण है गोकुल हमें शासन से पूरा सहयोग मिल रहा है लेकिन हम अब भी समाज की उन समस्याओं का समग्र हल नही कर पा रहे हैं जिनकी घोषणा हमने कभी नगरपालिका के चुनाव में की थी!

गोकुल– इसका कारण शासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार है कबीर! जब तक इसे नहीं रोका जा सकेगा तब तक समाज की समस्याओं का हल नही किया जा सकेगा।

कबीर– लेकिन व्यवस्था के भ्रष्टाचार को कौन रोकेगा? हमारे पास तमाम शक्ति है, हमने भ्रष्ट प्रशासनिक अधिकारियों के तबादले करा दिए, हम खुद निगरानी कर रहे है लेकिन परिणाम पहले के जैसे ही हैं। सच तो यह है कि लोग घूस देकर अपना काम करा लेते है और अधिकारी भी ऐसा कर रहे है, यह सब क्या हैं?

गोकुल– तो क्या समाज खराब है?

कबीर– नही! बल्कि सच तो यह है कि समाज तो एक तरल की तरह होता है, इसके कार्य जिस जरिए भी सरलता से हो जाते हैं यह उसी ओर बह जाता है। समाज की इस दशा के प्रबन्ध के लिए ही व्यवस्थाओं का निर्माण किया गया है ताकि शरीफ और चालाक लोगों के काम समानता से होते रहें और धूर्त मनमानी न कर सकें।

गोकुल– तो फिर गलत कौन है?

कबीर– व्यवस्था.......!

गोकुल– यह कैसे......?

कबीर– इसकी संरचना में उत्तरदायित्व निर्वहन का अभाव दिखायी देता है।

गोकुल– यह तथ्य मुझे कुछ समझ में नही आ रहा है!

कबीर– हमें इस विषय पर परिश्रम करना होगा गोकुल। क्योकि जब हम व्यवस्थाओं के जरिए सक्षम होने के बाद भी समाज की समस्याओं को हल नही कर पा रहे है और ऐसा करने की हमारी नीयत भी है तो हमें यह समझना तो होगा ही कि गलत क्या है?

गोकुल– हाँ, बिल्कुल ऐसा करना हमारी जिम्मेदारी भी बनती है। .....और कबीर एक चिन्तन में खो जाते है। कुछ क्षण बाद वह गोकुल से कहते है–

कबीर– इस विषय के अध्ययन के लिए हमे एक अध्ययन शिविर आयोजित करना चाहिए। जिसमें देश भर के लोगों को बुलाकर हम इस समस्या के सुलझाव का कोई रास्ता निकाल सकें!.....और इस विषय को लेकर रामानुजगंज के ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर एक शिविर आयोजित किया जाता है। इसके आरम्भ में देश भर से पधारें विद्वानों के सामने कबीर अपना मंतव्य प्रकट करतें हैं–आप सभी आगन्तुकों का मै ज्ञानयज्ञ केन्द्र के इस शिविर में स्वागत करता हूँ। आप अवगत है कि देश ने आपातकाल के रूप में शासन की तानाशाही झेली है और उसके उपरान्त समाज ने सरकार को बदल कर एक साहसी कदम उठाया है। इस ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर पूर्व में आयोजित हुए आयोजनों में हमलोग यह निष्कर्ष निकालते रहे हैं कि यदि शासन अपनी शक्ति का ठीक प्रयोग करे तो सहजता पूर्वक समाज की समस्याए हल की जा सकती हैं। लेकिन अपनी सरकार बनने पर भी हम न तो सरकार के ढ़ाँचे में संलग्न लोगों से समुचित काम ले पा रहे हैं और न समाज की जीजीविषा ही ऐसी प्रतीत होती है कि समाज अपने स्वरूप को अपने ही अनुकूल बनाना चाहता है। मुझे तो यह स्थिति एक संक्रमण काल के जैसी प्रतीत होती है। क्या कोई महानुभाव ऐसा बताने की कृपा करेगा कि इस परिस्थिति का क्या कारण हैं?.....

(कबीर के इस वक्तव्य को सुनकर शिविर में चुप्पी छा जाती है। कुछ अन्तराल के बाद शिविर में पधारे विजय शंकर बाबू बोलते हैं)

विजय बाबू– कबीर आपने बहुत गम्भीर प्रश्न उठाया है। वस्तुतः यह प्रश्न इस विषय को स्पष्ट करता है कि न तो सरकार अपने उत्तरदायित्व को पूरा कर रही है और न समाज ही सरकार से यह सवाल कर पा रहा है कि एक व्यवस्था निकाय के रूप में जब उसे पर्याप्त शक्ति मुहैया है तो उसे ऐसा करने में क्या हर्ज है?. (विजय शंकर बाबू अपनी बात आगे बढ़ा पाते तो एक अन्य व्यक्ति बोल पड़ते है–)

अन्य व्यक्ति– मुझे तो लगता है कि इस सरकार में निहित लोगों का चरित्र भी ठीक नहीं है और सरकार के भीतरी वातावरण को समझा जाए तो यह भी साफ होता जा रहा है कि इन लोगों के आपसी विवाद बढते जा रहे हैं। अगर ऐसा ही रहा तो यह सरकार पूर्व की सरकारो से भी निकम्मी साबित होने वाली है।

कबीर– महोदय हम यहाँ सरकार के चरित्र की समीक्षा करने के लिए एकत्रित नहीं हुए है। क्योकि सरकार कोई भी हो हम उसे तभी ठीक कह सकते है जब वह समाज की कसौटी पर खरी उतरे। (... इनकी बात सुनकर कबीर कहते हैं।)

विजय बाबू– लेकिन अब हमें किस दिशा में बढना चाहिए कबीर! क्योकि हम पूर्व की सरकारो की कार्यप्रणाली भी देख चुके हैं और इस सरकार के काम–काज भी देख रहे हैं। मुझे तो सभी सरकारो का चाल–चलन एक जैसा ही दिखाई देता है।..... विजय शंकर बाबू अपनी बात कहते हैं।

कबीर– क्या यह सम्भव नहीं है कि सरकारो की असफलता की बजाय वह तन्त्र ही गलत हो जिसके अनुसार सरकार को काम करना होता है! ऐसा होने का यह कारण नजर आता है कि जनता अपनी व्यवस्था चलाने के लिए अपेक्षाकृत इमानदार लोगों का चुनाव करती है लेकिन वह बेईमान तथा लापरवाह सिद्व होते हैं। व्यवस्था तन्त्र तथा समाज इन लोगों पर कोई नियन्त्रण नहीं कर पा रहा है। मुझे तो यह विषय अनावश्यक शक्ति केन्द्रीयकरण का नजर आता है।

विजय बाबू– बिलकुल अब हमें ऐसा कुछ सोचना ही होगा जिससे हम ऐसे निष्कर्ष तक पहुँच सके कि हमें समस्याओं की उत्पत्ति का मूल कारण पता चल जायें!

———————————

दृश्य–14

पात्र– सुत्रधार, कबीर, गोकुल, जगत, अन्य साथी, दादा

नेपथ्य से सूत्रधार–

(और देश में आपातकाल के बाद बनी गैर कांग्रेसी सरकार भी समाज की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। यह सर्वविदित है कि देश में आपातकाल के पहले सरकार के विरुद्ध जो जन आंदोलन हुआ था उसकी सबसे बडी मांग अकर्मण्य जनप्रतिनिधियों को उन्हें उनके पद से हटाने का जनता को अधिकार दिलवाने के लिए थी अर्थात व्यवस्था में राइट टू रिकॉल का प्रावधान होना ही चाहिए। लेकिन जिस वैचारिक आधार पर यह जन आंदोलन हुआ और देश की सत्ता बदली, इसकी बुनियाद पर खड़े होकर जो नेता देश की सरकार बने उन्होंने ही कहा कि जनता की यह मांग व्यावहारिक नहीं है। आपातकाल के बाद देश की जनता ने राजनीति का ऐसा दोहरा चरित्र देखा कि जिससे घृणा के सिवा और कुछ किया ही नहीं जा सकता है। मेरे विचार से जयप्रकाश आन्दोलन के बाद के घटनाक्रम ने इस धारणा को बेहद प्रबल बनाया कि राजनीतिक लोग न तो समाज की कसौटी पर कभी खरे उतर सकते हैं और न इन लोगों पर कभी विश्वास किया जाना चाहिए।..... प्रश्न यह है कि समाज में जिस प्रकार व्यवस्था बनती आयी है और इनके जरिए इन्हें चलाने वाले लोग शक्तिशाली बनते आए हैं, इन्हें निरंकुश बनने से रोकने का भी कोई उपाय नहीं किया गया है। मूलतः यह प्रश्न तो मानव सभ्यता के विकास पर होना चाहिए कि वह व्यवस्था चलाने के नाम पर निरंकुश लोगों द्वारा प्रदत्त गुलामी को कब तक सहती रहेगी! व्यवस्था चलाने के लिए शक्ति चाहिए तो व्यवस्था चलाने वालों को निरंकुश बनने से रोकने के लिए भी ऐसा कोई विकल्प होना ही चाहिए जिससे ये लोग निरकुश न बन जाए। लेकिन अफसोस कि ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं!..... कबीर और ज्ञान यज्ञ केन्द्र इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शक्ति के द्वारा ही समस्याएं हल होती है और शक्ति के द्वारा ही इन्हें विकसित किया जाता है। अर्थात समाज जिस जरिए से अपनी समस्याओं के हल की उम्मीद करता है वह तो बुनियादी तौर पर अविश्वसनीय है। तो फिर इसका हल क्या है?.....बात आगे बढ़ चलती है। जनता ने उम्मीदों से जो सरकार बनाई थी वह नेताओं के सत्ता संघर्ष में धराशायी हो गई। जनमानस के उत्थान के लिए अनेक लोगों ने संघर्ष किया, यातनाएं झेली लेकिन कुछ लोगों के राजनीतिक स्वार्थ ने उसे औचित्यहीन सिद्ध कर दिया। लेकिन कोई भी व्यक्ति समाज में यूं ही तो विशेष सिद्ध नहीं हो जाता। यह मुकाम तो उन्हें मिलता है जो विपरीत और कष्टदायी परिस्थितियों की परवाह न करते हुए उत्तरदायित्व निर्वहन को ही जीवन का लक्ष्य बनाते हैं।.....घटना क्रम आगे बढ़ता है। कबीर सक्रिय राजनीति से यह कहते हुए सन्यास ले लेते हैं कि मेरी यह धारणा गलत थी कि शक्ति के द्वारा समस्याएं हल की जा सकती हैं। मै इसे अपनी हार मानता हूँ और समाज से क्षमा मांगता हूँ कि मेरे प्रयोजनों से कई लोगों को कष्ट पहुँचे होगें। ज्ञान यज्ञ केन्द्र की तपोस्थली से ही समाज की इस बुनियादी समस्या का हल खोजा जाना है। सत्य की खोज का

मार्ग तपस्या ही होता है। कबीर की जो जीवनधारा राजसी वैभव प्राप्त कर सकती थी वह उसे छोड़ देता है। समय का बहाव आगे निकल आता है। जीवन की अठखेलियां चलती रहती हैं तो दूसरी ओर रामानुजगंज के ज्ञान यज्ञ केन्द्र पर अध्ययन, चिंतन, मंथन का क्रम अनवरत चलता रहता है। यहाँ समाज की संरचना के विषयों के साथ इसकी व्यवस्था के निर्वहन के अनेक विषयों का पुनःअन्वेषण होता है। यह अन्वेषण यह सिद्ध करता है कि जब तक इसकी संरचना के अंग–प्रत्यंगो की परिभाषाएं ठीक नहीं होंगी तब तक समाज की दिशा ठीक नहीं हो सकती है और जब तक समाज की दिशा ठीक नहीं होगी तब तक जनमानस का जीवन निर्वाह सन्तुलित नहीं हो सकता है। अपने अनुसंधान के फलस्वरुप ज्ञान यज्ञ केन्द्र समाज के सामने यह स्पष्ट करता है कि समाज सर्वोच्च इकाई है। जीवन का प्रत्येक पड़ाव और प्रत्येक व्यवस्था इसके प्रति उत्तरदाई होनी चाहिए। समाज शब्द के प्राकृतिक स्वरूप के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति, समाज की इकाई है यहाँ तक कि आवश्यकता पड़ने पर समाज के अस्तित्व के लिए राष्ट्र की सम्प्रभुता भी समाज में निहित की जा सकती है। धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा जैसे विषय तो समाज में गौण हो ही जाने चाहिए।..... यह वह दौर भी होता है जब पूर्वी भारत के कई राज्यों से लेकर मध्य भारत के पठारी भाग तथा दक्षिण की तरफ भी नक्सलवाद अपने पांव पसार चुका होता है। सामाजिक एवं शासन गत शोषण से मुक्ति की घोषणा इस तथाकथित जन आन्दोलन का नारा होता है। लेकिन जब इसके वजूद को टटोला जाता है तो इसका मकसद देश की सत्ता पर कब्जा करना होता है।..... ज्ञान यज्ञ केन्द्र के स्वतन्त्र अध्ययन का एक परिणाम यह भी आता है कि वर्तमान सरकार इसे अपने विरोध का कारण मान लेती है और कबीर को नक्सलवादी घोषित कर देती है।

संयमी लोग कष्ट के समय बहुत सन्तुलित आचरण करते हैं। इस दौर का भी निवारण होता है और ज्ञान यज्ञ केन्द्र अपने अनुसंधान के रूप में समाज व्यवस्था के सन्दर्भ में 'भावी भारत का संविधान' नामक पुस्तक इसके सामने प्रस्तुत करता है। अपने तार्किक विश्लेषणों एवं व्यवस्था प्रबन्धन की विषय–वस्तु के आधार पर यह पुस्तक देश के विद्वत जगत में अपनी पहचान बना लेती है। इस पुस्तक की विषय वस्तु तार्किक आधार पर व्यवस्था द्वारा स्थापित उन मिथकों को तोड़ते हुए प्रतीत होती है जिन्हें संविधान निर्माण के समय समाज की व्यवस्था का कारण मान लिया गया था। ऐसा पाकर रामानुजगंज के लोग कबीर को यह चुनौती देते हैं कि यदि ज्ञान यज्ञ केन्द्र का अनुसंधान इतना तार्किक है तो इसके जरिए रामानुजगंज का व्यवस्था का सुचारु संचालन करके दिखायें। कबीर रामानुजगंज की जनता के नाम पर जगत द्वारा दी गई इस चुनौती को स्वीकार कर लेते हैं और उससे यह पूछते हैं–)

कबीर– इसका उपाय क्या होगा?

जगत– इसका उपाय यह होगा कबीर बाबू कि आपको फिर से रामानुजगंज नगर पालिका का चेयरमैन चुना जाएगा और यह साबित करने के लिए समाज के स्तर पर कोई भी आपके आड़े नहीं आएगा। यदि ऐसा न हो सका तो आपको हार मानकर या घोषित करना होगा कि आपने अपने तमाम प्रयासों से सदैव समाज को गुमराह किया है!

कबीर– क्या मैं इस बात का जवाब सोच–समझ कर दे सकता हूँ जगत बाबू!

जगत– हाँ आप चाहे जितना समय लिजिए!

कबीर– ठीक है....!

(कबीर इस विषय पर अपने सभी भरोसेमंद साथियों से चर्चा करते हैं। ज्ञान यज्ञ केन्द्र पर इस विषय की भरपूर समीक्षा होती है–)

गोकुल– क्या जगत की नियत पर यकीन किया जा सकता है कबीर बाबू!.... गोकुल बाबू कहते हैं!

कबीर– बिल्कुल नहीं, लेकिन हमें अपने अनुसंधान को सिद्ध करने के लिए एक माध्यम चाहिए! यह विषय हमारी क्षमता पर निर्भर करता है कि हम जगत तथा उसके समूह की चालबाजी का शिकार हो जाएंगे या अपना मकसद हासिल कर लेगें!

अन्य साथी– सोचने वाली बात यह है कबीर कि जगत हमें चुनाव में ही धराशायी करने की चाल चलेगा या चुनाव जितवाकर रामानुजगंज की जनता के सामने असफल सिद्ध करेगा.....! कबीर के एक अन्य साथी अपनी राय रखते हैं!

कबीर– आप सब यह जान लीजिए कि वह चुनाव जीतने में हमारी मदद करेगा लेकिन हमारे कार्यकाल को असफल सिद्ध करने की हर सम्भव कोशिश करेगा। क्योंकि उसे रामानुजगंज में अपना राज्य चाहिए और वह तब तक कायम नहीं होगा जब तक हमारा समूह या तो नगर छोड़कर न चला जाए या हम धूल–धूसरित न हो जाएं!

गोकुल– क्या इतना गलत सोचे बिना उसकी रोटी हजम नहीं होती....?

कबीर– हमारे लिए उसके चरित्र का अध्ययन करने से बेहतर यह है कि हम अपने कार्य के बारे में सोचें कि हमें क्या करना है?

अन्य साथी– हम चुनाव लडेगें और यह साबित करेगें कि हम समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना जानते हैं....! कबीर के एक अन्य साथी बैठक में यह घोषणा करते हैं।

अन्य साथी– ठीक है साथियों यह निर्णय हुआ कि हम चुनाव भी लड़ेगें और रामानुजगंज में यह साबित भी करके दिखाएगें कि हम कर सकते हैं!.... बैठक में मौजूद एक अन्य साथी यह घोषणा करते हैं।

(और कबीर एक बार फिर नगर पालिका अध्यक्ष चुनाव जीत जाते हैं। वह परम्परा अनुसार अध्यक्ष पद की शपथ लेते हैं और जनसभा में यह घोषित करते हैं–)

कबीर– रामानुजगंज के आम जनमानस से मेरी यह प्रार्थना है कि हर कोई रामानुजगंज की नगर पालिका से यह आशा कर सकता है कि उसे न्याय और सुरक्षा देना नगरपालिका की जिम्मेदारी है। चाहे तो लोग अपने घरों के दरवाजे खुले छोड़कर सोयें यदि चोरी, डकैती हुई तो डकैतों को पकड़वाने और सजा दिलवाने की जिम्मेदारी नगर पालिका की होगी। नगर पालिका में काम करने वाले सरकारी कर्मचारी भी यह समझ लें कि उन्हें सरकारी योजनाओं में मनमाने ढंग से लूट नहीं करने दी जाएगी और मै स्वयं नगरपालिका का केवल एक काम करूंगा, वह यह कि रामानुजगंज की जनता सप्ताह में एक बार आम सभा करके रामानुजगंज के बारे में जो भी प्रस्ताव करेगी, मैं रामानुजगंज का नगर पालिका अध्यक्ष होने के आधार पर उस निर्णय यहाँ की व्यवस्था के रूप में लागू कर दूंगा। यह बिल्कुल ठीक है कि हमें किसी से टकराना नहीं है, हिंसावादियों का समर्थन नहीं करना है, कानून तोड़ने से भी बचना है लेकिन गुलामी भी नहीं करनी है...!

दादा– कबीर यह कैसे निजाम के आने की बात कर रहे हो तुम....! भीड़ से यह आवाज आती है।

कबीर– यह जनता का निजाम है दादा, जनता ही इसकी मालिक भी है और भुक्तभोगी भी! अपना अच्छा–बुरा सोचने का अधिकार मालिक का होता है नौकर का नहीं, नौकर का काम मालिक की व्यवस्था बनाना नहीं बल्कि उसे चलाना होता है, आज से रामानुजगंज में यही होगा।

———————————————

दृश्य–15

पात्र– सूत्रधार, कबीर, कर्मचारी, गोकुल

नेपथ्य से सूत्रधार–

(कबीर की यह घोषणा रामानुजगंज की जनता के साथ यहाँ के सरकारी अमले के बीच भी एक हलचल मचा देती है। चारों ओर एक ही चर्चा होती है कि अब रामानुजगंज की व्यवस्था कैसे चलेगी? दूसरी ओर कबीर तथा नगरपालिका के अन्य चुने हुए प्रतिनिधि अपनी घोषणा के आधार पर कार्य करने लगते हैं। रामानुजगंज का आम जनमानस देख रहा होता है कि समाज अपनी व्यवस्था को स्वयं चला रहा होता है। एक घटनाक्रम में नगरपालिका का एक कर्मचारी एक दिन कबीर बाबू से कहता है–)

कर्मचारी– आपने हम लोगों की ऊपरी आमदनी के सभी स्रोत बंद करा दिए हैं। वेतन से गृहस्थी चलाना मुश्किल हो रही है। बेहतर है कि आप हमारा कहीं और तबादला करा दें!

कबीर– यह तो अपने प्रति आप की ही जिम्मेदारी है, आप तबादला कराएं या नौकरी छोड़े आपकी मर्जी!

कर्मचारी– आप हमारे प्रति बहुत निर्मम है हुजूर, क्या देश में कहीं और भ्रष्टाचार नहीं हो रहा है?

कबीर– आप बहुत हिम्मत के आदमी हैं कर्मचारी महोदय, जो अनाचार को अधिकार मानने का युँ दावा कर रहे हैं!

कर्मचारी– अब क्या कहें बस कुछ समझ में नहीं आता?

कबीर– घर जाइए और विचार कीजिए कि तुम्हें क्या करना है?

(उसके जाने के बाद कबीर खुद से कहते हैं–)

कबीर– देश में व्यवस्थागत भ्रष्टाचार इस हद तक तारी है कि लोग अब इसे दिनचर्या का हिस्सा मानने लगे हैं। क्या यह वास्तव में ही कोई गम्भीर अपराध है? इसे गम्भीरता से समझा जाना चाहिए। लेकिन प्रश्न यह है कि व्यवस्था इसे करने के लिए है अथवा रोकने के लिए! व्यक्ति स्वभाव से लालची हो सकता है, इस धारणा का उन्मूलन असम्भव सा लगता है लेकिन व्यवस्था के होते भ्रष्टाचार है यह व्यवस्था के अस्तित्व पर प्रश्न पैदा करता है। क्योंकि इसे रोकना ही तो व्यवस्था के निर्माण का कारण है और फिर यहाँ तो वही लोग भ्रष्टाचार को अपना अधिकार मान रहे हैं जिन्हें यह व्यवस्था चलानी है! इस दशा में यह प्रश्न पैदा होता है कि इन्हें ऐसा करने से कौन रोकेगा? भीड़ को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता, यदि ऐसा हुआ तो समाज अराजक हो जाएगा और यदि राज्य सेवकों पर कोई अंकुश न लगा तो! ..... तो यह भ्रष्टाचार समाज में राजकीय अराजकता का माहौल पैदा कर देगा! क्योंकि समाज, व्यवस्था चलाने वाले लोगों का भ्रष्टाचार क्यों और कब तक बर्दाश्त करेगा! लेकिन प्रश्न यह भी है कि इस भ्रष्टाचार को करने का मुख्य दोषी कौन है? काम करने वाला या काम कराने वाला अथवा दोनों ही. ....! मैं कहता हूँ कि कोई भी अधिकार विहीन व्यक्ति एक तरल की तरह होता है, वह तो हर दृष्टिकोण से अपना काम निकालने की कोशिश करता है। वह बह कर कहीं भी जाए उसे रोकने के लिए अथवा प्रबन्धित करने के लिए ही तो व्यवस्था बनाई गयी है और इस व्यवस्था को लागू करने वाले लोग ही जब इसे तोड़ने लगे या यह व्यक्ति की इच्छाओं के बहाव को स्थापित नियम के द्वारा रोक न सके तो यह तो व्यवस्था के अस्तित्व पर ही प्रश्न होना चाहिए!..... चिंतन मग्न कबीर एक क्षण रुकता है लेकिन चिन्तन धारा उस पर पुनः प्रभावी हो जाती है– लेकिन यह भी सच है कि व्यवस्था चलाने वाला भी तो एक व्यक्ति ही होता है। क्या वह बहक नहीं सकता है? यूं तो यह बात नहीं सुलझ सकती है। क्योंकि इस दृष्टिकोण को भी तर्क के आधार पर सिद्ध किया जा सकता है कि मूल दोष भ्रष्टाचार करने वाले का है और इस दृष्टिकोण को सिद्ध करने के लिए भी पर्याप्त तर्क रहेंगे कि मूल दोष तो भ्रष्टाचार करवाने वाले का है! इस दशा में किसे दोषी ठहराया जाएगा?

इस विषय को समझने के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि व्यवस्थागत भ्रष्टाचार क्या है? इस प्रश्न का उत्तर केवल यह हो सकता है कि जो धन मालिक से छुपाकर इस्तेमाल कर लिया जाए वह भ्रष्टाचार है। सार्वजनिक व्यवस्था में किसी भी विषय–वस्तु की मालिक जनता होती है न कोई सरकार, न कोई जनप्रतिनिधि और न जनसेवक, ये सब तो इसके प्रबन्ध तन्त्र का हिस्सा होते हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या भारत की व्यवस्था ऐसी है कि जनप्रतिनिधि, नेता, अधिकारी, पूँजीपति, बुद्धिजीवी इसके मालिक सिद्ध नहीं होते है? आश्चर्य का विषय यह है कि व्यवहार में तो यही सब इसके मालिक सिद्ध होते हैं क्योंकि ऊपर से नीचे तक जो व्यवस्था जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए बनी है उसकी हर इकाई भ्रष्टाचार करने के लिए आपस में जुड़ी हुई है। इसीलिए सबसे पहले हमें यह करना होगा कि व्यवस्था इन लोगों की कैद से कैसे छूटे अथवा व्यवस्था का ढांचा ऐसा बने कि व्यवस्था चलाने वाले तथा समाज के पूँजीपति एवं बुद्धिजीवी इसके मालिक न बन सकें। मेरे अनुसंधान में यह बात सिद्ध होती है कि भारत में भ्रष्टाचार व्यवस्था जनित है। इसलिए सबसे पहले हमें देश की व्यवस्था को बदलना होगा, इसे ऐसा बनाना होगा कि व्यवस्था की एक इकाई की अकर्मण्यता या भ्रष्टाचार को दूसरी इकाई संरक्षण ही न दे सके और यदि ऐसा हो तो ऐसा करने वाले लोग दण्डित हुए बिना न रह सकें अर्थात उत्तरदायित्व की बाध्यता में पूरा व्यवस्था चक्र बंधा हुआ होना चाहिए न कि वर्तमान के बनावटी नियमों के जैसा हो। वर्तमान व्यवस्था के ढ़ाचे का जब हम अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि इसमें ऐसे सब प्रावधान तो हैं लेकिन उनमें अपनी उपयोगिता सिद्ध करने का दम नहीं है अर्थात हमारी तमाम व्यवस्था एक तरह से जनता के लिए अनउपयोगी है।.... और चिंतन मग्न कबीर का ध्यान भंग होता है तो सामने गोकुल होते हैं–

गोकुल– कहाँ खोए हो कबीर!

कबीर– समाज की दशा कितनी संगीन है कि एक सरकारी कर्मचारी भ्रष्टाचार पर अपना दावा कर रहा था!

गोकुल– तो उसे तो नौकरी से निकाल दिया जाना चाहिए!

कबीर– नहीं....!

गोकुल– क्यों....?

कबीर– क्योंकि व्यवस्थागत भ्रष्टाचार मूलतः व्यक्ति की देन नहीं होता बल्कि व्यवस्था के गलत या असामयिक प्रावधानों का परिणाम होता है। आज देश की व्यवस्था भ्रष्टाचारियों को दण्डित करने के लिए पर्याप्त नहीं है इसीलिए ऐसा हो पा रहा है। हमने रामानुजगंज की व्यवस्था को जनता के सामने रख दिया है कि नगर में जो भी राजकीय योजना आएगी वह खुली बैठक में जनता के सामने रख दी जाएगी, जनता जैसा चाहेगी उसका इस्तेमाल कर लेगी और हमारी इस छोटी सी कोशिश ने भ्रष्टाचार पर लगाम लगा दी है, तो यह प्रयोग देश की व्यवस्था में क्यों नहीं किया जा सकता है? अब नगर के लोग अपनी व्यवस्था को सफल बनाने के लिए नगर में गुप्त पहरा देते हैं। जिससे चोरी, डकैती, हिंसा, बलात्कार जैसी घटनाएं रुक रही हैं। यदि इसके अन्य पहलुओं पर विचार करके इसे और ठीक बना दिया जाए तो समाज को बहुत लाभ होगा।

गोकुल– आप ठीक कह रहे हो कबीर, हमें इसकी कोशिश करनी चाहिए।.... लेकिन हम इसके प्रसार की क्या कोशिश कर सकते हैं?

कबीर– मैं सोच रहा हूँ कि अपने इस अनुसंधान और इसके प्रसार के लिए हमें दिल्ली में अपना एक कार्यालय बनाना चाहिए। जिसके जरिये हम अपने अनुसंधान को और व्यापक स्तर पर जनता के सामने रख सकें।

गोकुल– यह तो अच्छा होगा।

कबीर– लेकिन तब हमारी कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी बढ़ जायेगीं।

गोकुल– कोई बात नहीं तब के लिए हम अतिरिक्त परिश्रम करने के लिए तैयार हैं।

नेपथ्य से सूत्रधार–

(.....और दिल्ली में ज्ञान यज्ञ कार्यालय की शाखा खोल दी जाती है। वहाँ जल्दी ही रामानुजगंज के इस अनुसंधान और प्रयोग को जानने के लिए अनेक लोग इस कार्यक्रम से जुड़ जाते हैं। कबीर पाते है कि यहाँ पर इस विचार को समझने वाले लोगों की तादाद बहुत है लेकिन कुछ समय बाद ही वह यह भी सिद्ध होते हुए पाते हैं कि यहाँ इस विचार को मानने वाला कोई नहीं है। कबीर एक बहतरीन, बहुउपयोगी और सिद्ध अनुसंधान को निरर्थक सिद्ध होते हुए पाते हैं। समय आगे बढ़ जाता है। कबीर तथा उनके साथियों के सामने यह प्रश्न होता है कि क्या हार मान ली जाय?.....लेकिन प्रश्न यह भी है कि रामानुजगंज के लोगों को ऐसा होने का क्या कारण बताया जायेगा? दिल्ली प्रवास के इस असफल परिणाम ने कबीर के सामने यह तथ्य प्रस्तुत किया कि व्यक्ति स्वार्थ की पूर्ती के लिए उत्तरदायित्व को नकार रहा है। कुछ वर्ष में ही कबीर वापस लौट आते है। इनका समाज विज्ञान का अनुसंधान जारी रहता है। रामानुजगंज के कई लोग यह जिक्र करते है कि अब इस सब की क्या जरूरत है? लेकिन एक अनुसंधान कर्ता अपनी जिजिविषा का परित्याग कैसे कर सकता है क्योंकि वह अपने उत्तरदायित्व को जानता है।

दूसरी ओर देश, व्यवस्था की असफलताओं से आजिज आ चुका होता है। आम आदमी सत्ता विरोध को अपनी जिम्मेदारी मान लेता है। देश में एक राजनीतिक क्रान्ति का आधार विकसित हो चलता है। सत्ता की अर्कमण्यता और राजनीतिक समझ के अभाव में देश में अन्ना आन्दोलन हो जाता है। लेकिन राजनीतिक लोगो की मक्कारी के हाथो इस बार भी देश ठगा जाता है। अन्ना आन्दोलन के कर्ता–धर्ता सत्ता के सामाजिक विकेन्द्रीयकरण के लिए कबीर द्वारा सुझाए गए लोक संसद निर्माण के विषय तथा रामानुजगंज के प्रयोग को जानकर भी नकार देते हैं। जिस आन्दोलन के आधार पर देश का व्यवस्था तन्त्र सामयिक बनाया जा सकता था और समाज को मौलिक स्वतन्त्रता का सुख दिया जा सकता था, वह कुछ नेताओं के स्वार्थ तथा अदूरदर्शी फैसलो के कारण असफल सिद्ध होता है। कबीर के जानकार यह बताते है कि दिल्ली में हुयी एक बैठक में कबीर ने यह निष्कर्ष पहले ही घोषित कर दिया था कि यह आन्दोलन उस उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा जिसकी घोषणा की गयी है। इसका कारण यह था कि आन्दोलन के लक्ष्य तथा वैचारिक आधार में बड़ा अन्तर था। आन्दोलन का लक्ष्य लोगों के लिए स्वराज्य प्राप्ति घोषित किया गया था और व्यवस्थाओं को केन्द्रीयकृत बनाने के लिए लोकपाल जैसे विषय को आन्दोलन का आधार बना दिया गया था। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि जिस पद का जो अधोहस्ताक्षरी नियुक्ति कर्ता हैं वह उसके घपले घोटाले पर कैसे नियन्त्रण कर सकता है? तब अन्ना आन्दोलन का कोई भी कर्ता–धर्ता इस प्रश्न का जवाब नहीं दे पा रहा था। अन्ततः अन्ना आन्दोलन असफल होता है और देश को ऐसे ही राजनेताओं की एक और जमात मिल जाती है जैसो की पहले से ही भरमार थी। इस आन्दोलन के बाद कबीर तथा उनके साथियों के सामने सबसे अहम प्रश्न यह था कि वह जनता के सामने किस बदलाव की बात करें क्योंकि जनता तो नेताओं के हाथों इस बार भी ठगी गयी थी। लेकिन पुनः यही प्रश्न है कि एक अनुसंधान कर्ता के लिए असफलता के मायने यही होते हैं कि यह घटना उसके सामने अगले अनुसंधान का कारण प्रस्तुत कर देती है। इस कालान्तर में अपनी अनुसंधान यात्रा में कबीर तथा उनके साथी पुनः दिल्ली और वहाँ से ऋषिकेश पहुँच जाते हैं। दुनिया में मानव सभ्यता के विकास का एक भयानक सच यह भी है कि समाज में अनुसंधान कर्ता और विचारक अक्सर जीवन में सत्य की खोज के बाद भी असफल ही रहते आए हैं। क्या विचारको की यह नियति होती है? दुनिया में सुकरात, गांधी, मार्क्स, रूसो, जयप्रकाश नारायण के नाम उदाहरण के रूप में हमारे सामने हैं और कबीर भी नियति का यह चक्र तोड़ नहीं पा रहे हैं। बिना उस मन को पढ़े इस सच को कह पाना बहुत मुश्किल है।

दृश्य (16)

पात्र – सिद्ध संत, कबीर

(कुछ करने को उद्दात और न कर पाने के कारण असफलता का भाव चेहरे पर लिए कबीर ऋषिकेश में माँ गंगा के पावन तट पर घूम रहे होते हैं। पास में ही एक सिद्ध संतो का समूह ध्यानस्थ होता है। उनमें से एक संत कबीर को देखकर अपने पास बुला लेते हैं और उनके चेहरे को भांप कर कहते हैं–)

सिद्ध संत– है कर्म योग ही सर्वत्र सर्वोच्च,
माता प्रकृति ऐसा दर्शाती है,
होता क्रियाशील रहना ही उनका विश्रामयोग,
जिनकी नियति कर्मयोगी सी होती है....।
(कबीर उन तेजस्वी संत को अपलक निहारते हैं। संत पुनः कहते है –)

सिद्ध संत – समाज की कोई व्यथा ही माँ गंगा के इस पावन तट पर भी तुम्हे व्यथित कर रही होगी श्वेत वस्त्र धारी संत....! क्या मुझे अपना नाम बताओगें?

कबीर– जी, मेरा नाम कबीर है।

सिद्ध संत – हर युग का कबीर समाज की रूढ़ियों से यूँही टकराता रहा है। तुम्हारे मस्तक के तेज और शारीरिक उदासी का कोई ताल–मेल नहीं है। चिन्ता न करो अब तुम माँ गंगा की शरण में हो, यहाँ तुम्हें उचित दिशा मिल ही जाएगी।

कबीर – आप श्रद्धेय हैं, आपका सत्कार है, आपने मुझसे बिना पूछे ही मेरे मन की पीड़ा जान ली है। मैं जब जीवन भर के निष्कर्षो को समाज की परिस्थिति और इसके सच को यथार्थ की तराजू से तोलता हूँ तो ऐसा लगता है कि जैसे समाज कुछ खुदगर्ज लोगों के चंगुल से मुक्त नहीं हो पाएगा। मेरे अनुसंधान के निष्कर्ष भी समाज का कोई हित नहीं कर पा रहे हैं। आप मार्गदर्शन कीजिए कि मैं क्या करूं....?

सिद्ध संत –एक कर्मयोगी, जिसने जीवन में भौतिक सत्ता को कभी महत्व नहीं दिया, समाज के हित हेतु ही जीवन जिया, ऐसा श्वेत वस्त्र धारी सन्यासी किंकर्तव्यविमुढ़ है। जो पूरे समाज का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है वह मार्गदर्शन ही मांग रहा है। तुम्हारी यह पारदर्शी भावना तुम्हारी योग्ता सिद्ध कर रही है।

कबीर – मैं अपने अन्तःकरण को आपकी दृष्टि से छुपा तो नहीं सकता हूँ। आप मेरी व्यथा समझ रहे हैं। मेरा आपसे पुनः आग्रह है कि मेरा मार्गदर्शन कीजिए कि मैं जीवन के अंतिम पडाव पर क्या करूं?

सिद्ध संत – अपना वही कर्म जिसे तुम रामानुजगंज से छोड़कर यहां तक आ गये हो।
(....कबीर बड़ी आशातीत दृष्टि से उनकी तरफ देखते हैं और कहते है –)

कबीर– लेकिन क्या रामानुजगंज के सीमित प्रांगण से समाज विज्ञान के इस महाअनुसंधान को विश्व के अंतिम छोर तक पहुँचाया जा सकता हैं?

सिद्ध संत – सृष्टि का कोई अंतिम छोर नहीं होता ए निष्काम कर्मयोगी। हर भू–क्षेत्र ईश्वर की रचना है और किसी नदी की अविरल धारा की तरह वह सर्वत्र सृष्टि से जुड़ा हुआ है। अंतिम छोर तो मनुष्य के हर स्वार्थ का होना चाहिए, यह न सत्य का हो सकता है और न प्रकृति का। तुम अपने कर्म–पथ पर लोट जाओ। और रामानुजगंज में जहाँ समाज–विज्ञान का यह महा–अनुसंधान हुआ है वही से इसे ईश्वर के संदेश के रूप में दुनिया भर में फैलाने की पुनः शुरूआत करो। माँ गंगा तुम्हारी सहायता करेगीं।

कबीर – जी....!

सिद्ध संत –अपने नगर से अपने विश्वास पात्र साथियों को बुलवाओं। वे पहुचेगें तो हम सब मिलकर इस महायज्ञ के आयोजन की योजना बनाऐगें।

कबीर – जैसी आपकी आज्ञा आदरणीय।

(और ऋषिकेश में माँ गंगा के पावन तट पर संतो के मार्गदर्शन में बैठकर कबीर तथा अन्य साथी रामानुजगंज में ज्ञानयज्ञ की पुनः शुरूआत की योजना बनाते हैं। माँ गंगा तथा साधु–संतों का आशीर्वाद लेकर कबीर अपने साथियों के साथ रामानुजगंज लौट आते हैं और ज्ञानयज्ञ केन्द्र पर स्थानीय समाज का मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं–)

कबीर– मेरी आप सभी से यह अपील है कि आप शराफत छोड़ें समझदार बनें। क्योंकि शराफत, धूर्तता का भोजन होती है और समाज में अनेक धर्मगुरू, बुद्धिजीवी, पूँजीपति, नेता, अधिकारी, लोगों को शराफत का ढ़ोग रचाकर उन्हें ठग लेते हैं। समाज में व्यक्ति के स्वभाव में हिंसा और स्वार्थ बढ़ रहा है। यह सब व्यवस्था के गलत स्वरूप का परिणाम है। इसका उन्मूलन किया जाना चाहिए और इसका उन्मूलन इस निष्कर्ष को जीवन का सिद्धान्त बनाकर किया जा सकता है। हमे समाज को ज्ञानयज्ञ के माध्यम से इस विषय पर जागरूक करना चाहिए। यह एक प्रकार से युग परिवर्तन का समय है। आप सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारी समझें और उसे पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करें। हम सभी अपने बड़े–बुजुर्गो से यह सुनते आये हैं कि वर्तमान दौर कलयुग का अन्तिम चरण है और कलयुग की समाप्ति के बाद कोई पाँचवा युग नहीं आ सकता है बल्कि समाज जागरूक होगा तो स्वतः ही पुनः सतयुग स्थापित हो जायेगा। प्रकृति भी ऐसा निर्णय करते हुए प्रतीत होती है। मानव सभ्यता के विकास का परिप्रेक्ष्य भी यह सिद्व करता है कि ईश्वर की आज्ञा के अनुसार मानव समाज को यह प्रयत्न करना है कि हम सब सभ्यता के उत्थान के लिए पुनः सतयुग की स्थापना का प्रयास करें। मेरी आप सभी साथियों से अपील है कि हमें पुनः रामानुजगंज में ज्ञानयज्ञ केन्द्र का निर्माण करके समाज में लोकस्वराज्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए और जनमानस को जीवन की स्वत्रन्ता का वास्तविक एहसास कराना चाहिए। यह बीज रामानुजगंज की पवित्र भूमि पर उत्पन हुआ है और निश्चित रूप से यह पवित्र और उर्वरा भूमि इसका ऐसा उत्पादन करेगी कि समाज का प्रांगण स्वराज्य के सर्वोचित उत्पादन से भर जायेगा। मै पुनः आप सभी साथियों से यह अपील करता हूँ कि रामानुजगंज में होने वाले इस महान महायज्ञ का हिस्सा बनकर युग परिवर्तन की नींव डाले। यही रामानुजगंज की आवाज है।

(कबीर अपने जीवन भर के अनुसंधान के निष्कर्ष जो एक पुस्तक में संकलित होते हैं उसे समाज को सौंप देते हैं।)

समाप्त

हमारी संस्थाएँ

- मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान
- ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य

- समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

- देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

- ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।
- ज्ञान मंथन–प्रत्येक रविवार को जूम एप के माध्यम से दोपहर ग्यारह बजे बजरंग मुनि जी द्वारा पूर्व निर्धारित विषय पर विचार–प्रस्तुति तथा सोमवार को ग्यारह बजे उक्त विषय पर प्रश्नोत्तर।
- मार्गदर्शक मंडल के रूप में ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।
- ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- फेसबुक एप से प्रसारण
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- जूम एप पर वेबिनार
- यू टयूब चैनल
- इंस्टाग्राम
- टेलीग्राम
- कू एप

हमारी जूम चर्चा
से जुड़ने के लिए
अपनी रिक्वेस्ट दिए गए
नंबर '7869250001' पर
वॉट्सऐप कर दीजिए,
आपको ZOOM लिंक
भेज दिया जाएगा

ठहराव और गति जीवन के दो पहलू हैं। यह परिस्थिति बयान करती है कि कब का ठहराव गति की तरह होता है और कब की गति ठहराव से बदतर! जीवन में जो व्यक्ति यथार्थ के इस पहलू का विश्लेषण कर लेता है वह समाज के लिए मार्गदर्शक बन जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में जो कहानी प्रस्तुत है वह ऐसे ही एक व्यक्ति की जीवन शैली को स्पष्ट करती है। इस कहानी को एक व्यक्ति ने वास्तव में जिया है। मैने तो आप लोगों के सामने इसे कहानी के रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

नरेन्द्र रघुनाथ सिंह

मार्गदर्शक प्रकाशन
42, मारूति लाइफ स्टाईल, कोटा रोड
रायपुर 492001